संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

शहर समता

वर्ष-22 अंक- 308
पृष्ठ 8
मंगलवार
28 जुलाई 2026
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- बच्चों को टिफिन में देना है...

विचार- जंतर-मंतर आंदोलन कई खतरनाक...

खेल- टीम इंडिया की गंभीर समस्या...

ऑनलाइन समीक्षा बैठकों में लापरवाही पर सख्ती

मुख्यमंत्री ने तय की जवाबदेही, अब अफसरों की उपस्थिति होगी अनिवार्य

लखनऊ,संवाददाता। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में जवाबदेह, अनुशासित और परिणामोन्मुख प्रशासन की दिशा में बेसिक शिक्षा विभाग ने ऑनलाइन समीक्षा व्यवस्था को और अधिक सख्त बना दिया है। अब निदेशालय स्तर पर आयोजित प्रत्येक ऑनलाइन समीक्षा बैठक में मंडल स्तर से सहायक शिक्षा निदेशक (बेसिक) तथा जनपद स्तर से जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी की अनिवार्य सहभागिता सुनिश्चित करनी होगी। अनुपस्थिति या अनधिकृत प्रतिनिधित्व की गुंजाइश नहीं होगी। इस संबंध में शिक्षा निदेशक (बेसिक) अनिल भूषण चतुर्वेदी ने सभी सहायक शिक्षा निदेशकों (बेसिक) और

जिला बेसिक शिक्षा अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश जारी किए हैं। निर्देशों में कहा गया है कि समय-समय पर आयोजित महत्वपूर्ण ऑनलाइन समीक्षा बैठकों में कई जनपदों से अपेक्षित स्तर की सहभागिता नहीं हो रही थी। कई मामलों में जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी स्वयं बैठक में शामिल नहीं होते थे और न ही किसी अधिकृत वरिष्ठ अधिकारी की उपस्थिति सुनिश्चित होती थी। इसे प्रशासनिक जवाबदेही के अनुरूप नहीं मानते हुए अब स्पष्ट व्यवस्था लागू की गई है। सभी अधिकारी केवल अपनी आधिकारिक ई-मेल आईडी के माध्यम से ही बैठक में शामिल होंगे, जिससे प्रतिभागियों की पहचान सुनिश्चित होगी और समीक्षा प्रक्रिया अधिक पारदर्शी एवं प्रभावी बनेगी।

नए निर्देशों के अनुसार प्रत्येक ऑनलाइन समीक्षा बैठक में मंडल स्तर से सहायक शिक्षा निदेशक (बेसिक) तथा जनपद स्तर से जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी स्वयं प्रतिभाग करेंगे। यदि किसी अपरिहार्य शासकीय कारण से वे उपस्थित नहीं हो सकते हैं, तो अपने स्थान पर किसी वरिष्ठ अधीनस्थ अधिकारी को विधिवत अधिकृत कर बैठक में भेजेंगे, ताकि किसी भी मंडल अथवा जनपद का प्रतिनिधित्व प्रभावित न हो। निर्देशों में स्पष्ट किया गया है कि एक ही जनपद या मंडल से अलग-अलग डिवाइस और अलग-अलग आईडी से बैठक में जुड़ने की व्यवस्था स्वीकार नहीं होगी। यदि एक से अधिक अधिकारियों की उपस्थिति आवश्यक हो तो सभी अधिकारी एक ही स्थान पर बैठकर एक अधिकृत लॉगिन आईडी के माध्यम से बैठक में शामिल होंगे। इससे तकनीकी अव्यवस्था समाप्त होगी और समीक्षा अधिक सुव्यवस्थित बनेगी। बेसिक शिक्षा विभाग का मानना है कि वरिष्ठ अधिकारियों की अनिवार्य उपस्थिति से समीक्षा बैठकों की गुणवत्ता बेहतर होगी, निर्णयों का समयबद्ध अनुपालन सुनिश्चित होगा और शासन की प्राथमिकताओं के अनुरूप योजनाओं की निगरानी तथा क्रियान्वयन में और अधिक गति आएगी।

लोकसभा में एंटी-पेपर लीक बिल पेश

छह महीने में सजा, 10 साल जेल और 10 करोड़ तक जुर्माना

नई दिल्ली,एजेंसी। देशभर में नीट पेपर लीक मामले को लेकर हुए छात्र आंदोलनों और शिक्षा व्यवस्था पर उठे सवालों के बीच केंद्र सरकार ने सोमवार को लोकसभा में पब्लिक एग्जामिनेशन (अनुचित साधनों की रोकथाम) संशोधन विधेयक, 2026 पेश किया। इस विधेयक में पेपर लीक और परीक्षा में धांधली करने वालों के खिलाफ पहले से कहीं ज्यादा सख्त सजा का प्रस्ताव रखा गया है। विधेयक को प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) में राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने लोकसभा में पेश किया। इस दौरान विपक्ष छात्र प्रदर्शनकारियों पर पुलिस कार्रवाई के विरोध में नारेबाजी कर रहा था। प्रस्तावित संशोधन के अनुसार, यदि कोई व्यक्ति पेपर लीक या सार्वजनिक परीक्षा में अनुचित साधनों का इस्तेमाल करते हुए पकड़ा जाता है तो उसे कम से कम 5 साल और अधिकतम 10 साल तक की जेल हो सकती है। साथ ही 50 लाख रुपये तक का जुर्माना भी लगाया जा सकेगा। अगर मामला संगठित अपराध से जुड़ा हुआ पाया जाता है तो दोषियों को कम से कम 7 साल की जेल और 10 करोड़ रुपये तक का जुर्माना भरना होगा। वर्तमान कानून के तहत पेपर लीक और नकल जैसे मामलों में 3 से 5 साल तक की जेल का प्रावधान है। वहीं संगठित तरीके से परीक्षा में धांधली करने वालों के लिए 5 से 10 साल की सजा और कम से कम 1 करोड़ रुपये जुर्माने का प्रावधान है। अब सरकार ने सामान्य पेपर लीक के मामलों में भी सजा और जुर्माने को और अधिक कड़ा करने का प्रस्ताव रखा है।

विधेयक पेश होने के बाद लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने विपक्ष के कई वरिष्ठ नेताओं को इस पर बोलने के लिए आमंत्रित किया, लेकिन कोई सदस्य नहीं बोला। इसके बाद उन्होंने कहा कि सभी दल लंबे समय से नीट पेपर लीक पर चर्चा की मांग कर रहे हैं और यह विधेयक परीक्षा व्यवस्था सुधारने की दिशा में पहला कदम है। उन्होंने विपक्ष से नारेबाजी के बजाय चर्चा में भाग लेने और सुझाव देने की अपील की।

ई20 नीति के खिलाफ आप का हल्लाबोल 1 अगस्त को बुलाया राष्ट्रीय टाउनहॉल युवाओं से जुड़ने की अपील

नयी दिल्ली, एजेंसी। आम आदमी पार्टी (आप) के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने केंद्र सरकार की ई 20 नीति को लेकर एक बार फिर अपनी आवाज बुलंद की है। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से देश के युवाओं से एकजुट होकर इस मुद्दे पर अपनी राय रखने और आंदोलन का हिस्सा बनने की अपील की है। केजरीवाल ने कहा कि जिस

तरह युवाओं की एकजुट आवाज के कारण केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान को इस्तीफा देना पड़ा, उसी तरह ई 20 के मुद्दे पर भी देश के युवाओं को संगठित होकर अपनी बात मजबूती से रखनी होगी। अरविंद केजरीवाल ने अपने संदेश में कहा, देश के युवाओं ने एक होकर आवाज उठाई तो धर्मेंद्र प्रधान को इस्तीफा देना पड़ा। ई 20 पर भी हमें एक होकर आवाज उठानी पड़ेगी। उन्होंने युवाओं से अपील करते हुए कहा कि यह केवल किसी एक संगठन या राजनीतिक दल का विषय नहीं है, बल्कि देश के भविष्य और आम जनता से जुड़ा मुद्दा है। इसलिए अधिक से अधिक युवाओं को इस अभियान में भाग लेना चाहिए। इसी उद्देश्य से आम आदमी पार्टी की ओर से नेशनल टाउनहॉल अगेंस्ट ई 20 का आयोजन किया जा रहा है। यह कार्यक्रम 1 अगस्त 2026 (शनिवार) को सुबह 11.30 बजे कॉन्स्टिट्यूशन क्लब, नयी दिल्ली में आयोजित होगा। पार्टी ने बताया कि इस कार्यक्रम में देशभर से छात्र, युवा, विशेषज्ञ, सामाजिक कार्यकर्ता और आम नागरिक भाग ले सकते हैं। जो लोग दिल्ली नहीं पहुंच सकते, उनके लिए कार्यक्रम में ऑनलाइन शामिल होने की भी व्यवस्था की गई है। पार्टी का कहना है कि इस टाउनहॉल के माध्यम से ई 20 नीति से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर खुलकर चर्चा होगी और लोगों की राय सुनी जाएगी। कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं और आम नागरिकों को अपनी चिंताओं और सुझावों को साझा करने का मंच उपलब्ध कराना है। आम आदमी पार्टी ने देशभर के युवाओं से इस कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में शामिल होने की अपील करते हुए कहा है कि लोकतंत्र में जनता की आवाज सबसे महत्वपूर्ण होती है। पार्टी का दावा है कि यदि नागरिक संगठित होकर अपनी बात रखेंगे तो सरकार को भी जनता की भावनाओं और चिंताओं पर गंभीरता से विचार करना पड़ेगा।

नई टास्क फोर्स पर सुप्रीम कोर्ट की नजर, ऑनलाइन नीट पर क्या बोले जज साहब

नई दिल्ली,एजेंसी। उच्चतम न्यायालय ने सोमवार को कहा कि वह इस बात पर नजर रखेगा कि नंदन नीलेकणी की अध्यक्षता में सरकार द्वारा गठित उच्चाधिकार प्राप्त कार्यबल नीट परीक्षा के ऑनलाइन आयोजन को लेकर क्या सुझाव देता है। न्यायमूर्ति पीएस नरसिम्हा और न्यायमूर्ति आलोक अराधे की पीठ ने कहा कि कुछ नए और लीक से हटकर सुझावों की जरूरत है, विशेष तौर पर तब जब नीट परीक्षा को पारंपरिक तरीके से आयोजित करने के बजाय इसके ऑनलाइन आयोजन का प्रस्ताव है। पीठ ने कहा, हमें साइबर सुरक्षा और डेटाबेस सुरक्षा के मामले में कुछ अतिरिक्त सुरक्षा उपाय (करने) की जरूरत है। पीठ राष्ट्रीय जनता दल के नेता एवं सांसद सुधाकर सिंह की याचिका पर सुनवाई कर रही थी। यह याचिका तीन मई को हुए राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा-स्नातक (नीट-यूजी) के प्रश्नपत्र लीक के आरोपों के बाद परीक्षा रद्द करने और नीट की परीक्षा दोबारा आयोजित कराने की घोषणा के बाद दायर की गई थी।

सुप्रीम कोर्ट ने सरकारों को दिया अहम संदेश

आंदोलन के नाम पर पुलिस ज्यादती सही नहीं

नयी दिल्ली,एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को कहा कि शांतिपूर्ण प्रदर्शन का अधिकार संविधान प्रदत्त है और किसी आंदोलन का हवाला देकर पुलिस की ज्यादतियों या लाठीचार्ज को उचित नहीं ठहराया जा सकता। प्रधान न्यायाधीश (सीजेआई) सूर्यकांत, न्यायमूर्ति जॉयमाल्य बागची और न्यायमूर्ति वी. मोहना की पीठ ने कहा कि वह मंगलवार को उन याचिकाओं पर सुनवाई करेगी जिनमें देश भर में नीट प्रश्नपत्र लीक और अन्य परीक्षाओं में अनियमितताओं को लेकर विरोध कर रहे छात्रों के खिलाफ पुलिस की ज्यादतियों का आरोप लगाया गया है। इसके अलावा पीठ विरोध-प्रदर्शन के दौरान जिन पुलिसकर्मियों पर हमला हुआ था, उनके कुछ परिवार के सदस्यों की ओर से दायर एक अलग याचिका पर भी सुनवाई करने को तैयार हो गई। इस याचिका पर दूसरी सूचीबद्ध याचिकाओं के साथ ही सुनवाई की जाएगी। प्रधान न्यायाधीश ने कहा, शांतिपूर्ण प्रदर्शन करना संविधान प्रदत्त अधिकार है और इससे इनकार नहीं किया जा सकता। केवल यह कहकर कि आंदोलन चल रहा है, पुलिस की ज्यादतियों को उचित नहीं ठहराया जा सकता। जब एक वकील ने कहा कि प्रदर्शन के दौरान कुछ पुलिसकर्मियों के साथ भी मारपीट की गई, तो पीठ ने कहा, हर व्यक्ति का जीवन महत्वपूर्ण है, चाहे वह कोई भी हो। पीठ ने कहा, इसके लिए एक स्पष्ट प्रोटोकॉल होना चाहिए। प्रदर्शन के लिए उचित स्थान उपलब्ध कराया जाना चाहिए और अनावश्यक पाबंदियां नहीं लगाई जानी चाहिए। यदि कुछ असामाजिक तत्व हों, तो उनसे कानून के अनुसार से निपटा जा सकता है। यह केवल दिल्ली का मामला नहीं है। पूरे देश में एक समान प्रोटोकॉल होना चाहिए। सिर्फ इसलिए कि कोई आंदोलन हो रहा है, इसका मतलब यह नहीं कि लाठीचार्ज किया जाए। लोकतांत्रिक प्रक्रिया के लिए आवश्यक है कि लोग स्वयं अनुशासन का पालन करें।श्र उन्होंने पक्षकारों से पीठ की सहायता करने का भी आग्रह किया। केंद्र सरकार की ओर से पेश हुए सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि वह इस मामले में निष्पक्ष रूप से अदालत की सहायता करेंगे। संक्षिप्त सुनवाई के दौरान अधिवक्ता फौजिया शकील ने आरोप लगाया कि बिहार में प्रदर्शनकारियों के खिलाफ पुलिस ने एके-47 राइफल का इस्तेमाल किया। वरिष्ठ अधिवक्ता विकास सिंह ने कहा कि बिहार में छात्रों पर हमले की कई घटनाएं भी हुई हैं। इससे पहले, सुप्रीम कोर्ट ने नीट प्रश्नपत्र लीक और अन्य परीक्षा संबंधी अनियमितताओं के विरोध में प्रदर्शन कर रहे छात्रों के खिलाफ पुलिस की कथित ज्यादती से संबंधित याचिकाओं पर सोमवार को सुनवाई करने पर सहमति जताई थी। नीट प्रश्नपत्र लीक के विरोध में छात्र कई राज्यों में प्रदर्शन कर रहे थे। कॉकरोच जनता पार्टी (कॉजपा) के नेतृत्व में 20 जुलाई को दिल्ली में निकाले गए मार्च के दौरान प्रदर्शनकारियों और सुरक्षा बलों के बीच झड़प हुई थी। संसद की ओर बढ़ रहे प्रदर्शनकारियों को रोकने के लिए सुरक्षा बलों ने लाठीचार्ज किया और आंसू गैस के गोले छोड़े थे। प्रदर्शनकारी नीट प्रश्नपत्र लीक मामले को लेकर केंद्रीय शिक्षा मंत्री पद से धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग कर रहे थे। शनिवार को धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफा देने के बाद कॉजपा ने 36 दिन से जारी अपना आंदोलन वापस ले लिया और सरकार ने पार्टी की अन्य मांगें भी स्वीकार कर लीं।

आज भी बापू का अहिंसा का रास्ता सबसे प्रासंगिक- सोनम वांगचुक

नई दिल्ली,एजेंसी। अस्पताल से छुट्टी मिलते ही सोनम वांगचुक सीधे राजघाट पहुँचे। 26 दिनों के कड़े अनशन और मेदांता में चले इलाज के बाद, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि देना उनकी पहली प्राथमिकता रही। बापू को नमन करते हुए उन्होंने देश को संदेश दिया कि आज भी सत्य और अहिंसा का रास्ता ही सबसे कारगर है। वांगचुक का कहना था कि एक सशक्त लोकतंत्र वही है जहाँ सरकारें जन-आवाज का सम्मान करें और हर गतिरोध को बातचीत के जरिए सुलझाएँ। इससे पहले एक्टिविस्ट सोनम वांगचुक ने कहा था कि उन्हें अस्पताल से छुट्टी मिल रही है और लद्दाख लौटने से पहले वे महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि देने राजघाट जाएंगे। एक्स पर एक पोस्ट में वांगचुक ने कहा कि वे सबसे पहले राजघाट

जाकर महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि देंगे। उन्होंने याद दिलाया कि स्विट्जरलैंड से लौटने के बाद जंतर-मंतर पर अपना अनशन शुरू करने से पहले भी उन्होंने ऐसा ही किया था। उन्होंने कहा कि आखिरकार वह दिन आ ही गया जब मुझे इस अस्पताल से छुट्टी मिल रही है। आज, यहां से निकलने और घर लद्दाख लौटने से पहले, मैं बापू (महात्मा गांधी) को श्रद्धांजलि देने राजघाट जाऊंगा। अपने अभियान की शुरुआत को याद करते हुए वांगचुक ने कहा कि आपको शायद याद होगा कि इसी तरह, जब मैं स्विट्जरलैंड से लौटा था, तो अनशन शुरू करने से पहले हमने राजघाट पर श्रद्धांजलि दी थी और फिर जंतर-मंतर गए थे। आज हम फिर वैसा ही करेंगे और उसके बाद लद्दाख में अपने घर के लिए निकलेंगे। वहाँ से निकलने से पहले, वांगचुक ने अभियान का समर्थन करने के लिए देश भर के लोगों का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि जाने से पहले, मैं आप सभी का तहे दिल से शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ। देश भर से, पास और दूर से, हर उम्र के लोग एक अभियान और आंदोलन चलाने के लिए हमारे साथ जुड़े और हम सफल भी हुए। और आगे भी ऐसा ही होता रहेगाय मुझे उम्मीद है कि मैं आप सभी से जुड़ा रहूँगा।

विजय थलपति को हाईकोर्ट से झटका

करूर भगदड़ में मरने वालों के परिजनों को सरकारी नौकरी देने पर रोक

चेन्नई,एजेंसी। मद्रास हाई कोर्ट ने मुख्यमंत्री जोसेफ विजय के उस फैसले को सोमवार को रद्द कर दिया, जिसके तहत करूर भगदड़ में जान गंवाने वाले लोगों के परिजनों को सरकारी नौकरी देने का फैसला लिया गया था। अदालत के इस आदेश के साथ ही राज्य सरकार की ओर से मृतकों के आश्रितों को दी गई नियुक्तियों पर कानूनी रोक लग गई। यह मामला लंबे समय से राजनीतिक और कानूनी बहस का विषय बना हुआ था। करूर भगदड़ 27 सितंबर 2025 को टीवीके के प्रमुख विजय की एक रैली के दौरान हुई थी, जिसमें 41 लोगों की मौत हो गई थी और कई अन्य घायल हुए थे। घटना के बाद भीड़ को संभालने और प्रशासनिक तैयारियों को लेकर गंभीर सवाल उठे थे। 10 जुलाई को सीएम विजय ने करूर भगदड़ के पीड़ित 31 परिवारों के सदस्यों को सरकारी नौकरी के नियुक्ति पत्र सौंपे थे। इसके अलावा, उन्होंने इरोड निवासी के. कंदासामी की पत्नी के. शांति को 10 लाख रुपये की आर्थिक सहायता भी दी। उनके पुत्र की मौत रैली के दौरान हुई भगदड़ में हुई थी। मई में मुख्यमंत्री पद संभालने के बाद करूर की अपनी पहली आधिकारिक यात्रा के दौरान विजय ने भगदड़ में जान गंवाने वाले 41 लोगों के परिजनों से मुलाकात कर उन्हें सांत्वना दी थी।

धर्मेंद्र प्रधान बोले-

स्ट्रीट फाइटर हूं, एसी रूम का एक्टिविस्ट नहीं

नई दिल्ली,एजेंसी। छात्रों के जबरदस्त विरोध के बाद केंद्रीय शिक्षा मंत्री के पद से इस्तीफा देने के दो दिन बाद, धर्मेंद्र प्रधान सोमवार को संसद पहुँचे। इस दौरान बीजेपी सांसदों ने जोरदार तालियों के साथ उनका स्वागत किया। जब प्रधान के साथियों ने उनका स्वागत किया, तो वे मुस्कुराते हुए नजर आए। बीजेपी के एक सांसद ने कहा कि शायद यह पहली बार है जब किसी केंद्रीय मंत्री ने बिना किसी व्यक्तिगत आरोप का सामना किए इस्तीफा दिया है। इसी स्वागत-समारोह के दौरान जयराम रमेश प्रधान के पास पहुँचे और उनके इस्तीफे पर सहानुभूति जताई। कांग्रेस नेता

ने उनसे कहा, ऐसा होता रहता है। प्रधान ने तुरंत जवाब दिया, कुछ नहीं हुआ, और साथ ही कहा- मैं जमीनी स्तर पर लड़ने वाला नेता हूँ, AC कमरे में बैठकर काम करने वाला एक्टिविस्ट नहीं। बीजेपी नेताओं ने इस छोटी सी बातचीत को इस संकेत के तौर पर देखा कि कैबिनेट से हटने के बावजूद प्रधान राजनीतिक रूप से आत्मविश्वास से भरे हुए हैं और अपनी अगली जिम्मेदारी संभालने के लिए तैयार हैं। इससे बीजेपी में उनकी अगली भूमिका को लेकर भी अटकलें तेज हो गई हैं। ओडिशा में पार्टी के सबसे बड़े नेताओं में से एक होने के अलावा, प्रधान को बार-बार संगठन और चुनाव से जुड़ी अहम जिम्मेदारियाँ सौंपी गई हैं। छात्रों के हफ्तों से चल रहे विरोध प्रदर्शनों के बाद धर्मेंद्र प्रधान ने शनिवार को इस्तीफा दे दिया। इन विरोध प्रदर्शनों का नेतृत्व मुख्य रूप से कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) कर रही थी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को इंफोसिस के सह-संस्थापक नंदन नीलेकानी की अध्यक्षता में एक उच्चस्तरीय कार्य बल के गठन की घोषणा की। इस कार्य बल का उद्देश्य परीक्षा प्रणाली को लीक-प्रूफ बनाने के लिए सुधारों की सिफारिश करना है।

हादसे रोकने के लिए सड़कों पर खर्च होंगे 3.56 करोड़, शासन को भेजा गया 15 परियोजनाओं का प्रस्ताव

प्रयागराज। हादसों को कम करने और यातायात को सुगम बनाने के लिए लोक निर्माण विभाग सड़क सुरक्षा के उपाय करने जा रहा है। इसके लिए जिले में सड़क सुरक्षा संबंधी 15 नई परियोजनाओं के प्रस्ताव शासन को भेजे गए हैं। हादसों को कम करने और यातायात को सुगम बनाने के लिए लोक निर्माण विभाग सड़क सुरक्षा के उपाय करने जा रहा है। इसके लिए जिले में सड़क सुरक्षा संबंधी 15 नई परियोजनाओं के प्रस्ताव शासन को भेजे गए हैं। इन कार्यों पर कुल 3.56 करोड़ रुपये खर्च होंगे। मंजूरी और बजट मिलने के बाद करीब 146 किलोमीटर सड़कों पर सुधार किया जाएगा। स्वीकृत परियोजनाओं में इलाहाबाद उत्तरी, बारा, फाफामऊ, फूलपुर और प्रतापपुर विधानसभा क्षेत्र शामिल हैं। कई कार्य जीरो फेटलिटी डिस्ट्रिक्ट कार्यक्रम के तहत होंगे। यह सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों को पूरी तरह रोकने या न्यूनतम करने की डाटा संचालित महत्वपूर्ण पहल है। कुछ परियोजनाओं में चौराहों, टी–जंक्शनों और वाई–जंक्शनों का सुधार किया जाएगा। फाफामऊ में राष्ट्रीय राजमार्ग 24 बी पर बाईपास का काम भी प्रस्तावित है। प्रतापपुर में वरुणा से जंघई होते हुए दुर्गागंज बॉर्डर तक मार्ग का सुधार भी शामिल है।

प्रमुख परियोजनाएं– इलाहाबाद उत्तर क्षेत्र में शास्त्री ब्रिज के लिए 40 लाख रुपये, फाफामऊ में राष्ट्रीय राजमार्ग 24 बी बाईपास के लिए 20.11 लाख रुपये प्रस्तावित हैं। प्रतापपुर में वरुणा से जंघई होते हुए दुर्गागंज बॉर्डर तक मार्ग सुधार पर 43.50 लाख रुपये खर्च होंगे। फूलपुर में प्रयागराज–गोरखपुर मार्ग पर जंक्शन सुधार के लिए 26 लाख रुपये का प्रस्ताव है। विधायक हर्षवर्धन बाजपेयी, वाचस्पति, गुरुप्रसाद मौर्य और दीपक पटेल ने अपने क्षेत्रों के लिए प्रस्ताव दिए हैं। सांसद विनोद कुमार बिंद ने प्रतापपुर विधानसभा क्षेत्र के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य प्रस्तावित किए हैं। वाहनों की रफ्तार को नियंत्रित करने के लिए स्पीड टेबल, रैपिड बॉक्स (लोहे के ब्रेकर) और साइन बोर्ड लगाए जाएंगे। ये सभी कार्य सेव लाइव फाउंडेशन की ओर से किए गए निरीक्षण के बाद प्रस्तावित किए गए हैं। संस्था ने इन सभी स्थानों पर दुर्घटना की आशंका जताई है।

शांतिपुरम गेट पर तैयार हो रहा रैपिड बॉक्स

हाईवे पर तेज दौड़ते वाहनों की रफ्तार को शहर में प्रवेश करते ही नियंत्रित करने के लिए रैपिड बॉक्स को विशेष वरीयता दी गई है। इसी कड़ी में शांतिपुरम के गेट पर रैपिड बॉक्स का निर्माण किया जा रहा है।

सड़क सुरक्षा संबंधी सुधार के लिए प्रशासन की तरफ से मिले निर्देश के बाद प्रस्ताव तैयार किया गया है। शासन से मंजूरी मिलने के बाद दुर्घटना बहुल मार्गों की मरम्मत की जाएगी। – नवीन कुमार, अधिशासी अभियंता, खंड तीन, पीडब्ल्यूडी

सुभाष चौराहे पर कपड़े के शोरूम में आग, शीशा तोड़कर घुसी दमकल टीम

प्रयागराज। सिविल लाइंस के सुभाष चौराहे स्थित पेट्रोल पंप के पीछे रविवार रात कपड़े के शोरूम में आग लग गई। तीन दमकल गाड़ियां के साथ पहुंचे कर्मियों ने शोरूम का शीशा तोड़कर भीतर प्रवेश किया। कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। घटना में कोई जनहानि नहीं हुई है। सिविल लाइंस के सुभाष चौराहे स्थित पेट्रोल पंप के पीछे रविवार रात कपड़े के शोरूम में आग लग गई। तीन दमकल गाड़ियां के साथ पहुंचे कर्मियों ने शोरूम का शीशा तोड़कर भीतर प्रवेश किया। कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। घटना में कोई जनहानि नहीं हुई है। रात करीब 9.45 बजे अग्निशमन विभाग को सूचना मिली कि पेट्रोल पंप के पीछे स्थित श्री साड़ी नामक शोरूम में आग लगी है। मौके पर पहुंची दमकल टीम ने देखा कि दुकान के अंदर धुआं भरा हुआ है। पिछले हिस्से से धुआं उठ रहा है। इसके बाद दमकल की टीम ने शीशा तोड़कर शोरूम में प्रवेश किया। प्रत्यक्षदर्शी शुभम, अर्जुन समेत अन्य लोगों ने बताया कि वे वहां से गुजर रहे थे तभी शोरूम से धुआं और आग की लपटें उठती दिखाई दीं। उन लोगों ने फायर ब्रिगेड को सूचना दी। शोरूम मम्फोर्डगंज निवासी रितेश सिंह का है। ऊपरी मंजिल पर उनके बेटे रघुवंश सिंह का इंटीरियर डेकोरेटर का कार्यालय संचालित होता है। इसी भवन की ऊपरी मंजिल पर पंजाब एंड सिंध बैंक की शाखा भी है। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि दुकान रात करीब 9रू30 बजे बंद कर दी गई थी। एमसीबी भी बंद कर थी। प्रारंभिक जांच में आग लगने का कारण शॉर्ट सर्किट को माना जा रहा है। मुख्य अग्निशमन अधिकारी चंद्र मोहन शर्मा ने बताया कि दमकलकर्मियों ने समय रहते आग पर काबू पा लिया जिससे बड़ा हादसा टल गया। आग लगने के कारणों और नुकसान का आकलन किया जा रहा है।

भाजपा नेता की कार पर हमला, भाजपा का झंडा देखकर रोकी गाड़ी

प्रयागराज। प्रयागराज के सिविल लाइंस थाना क्षेत्र में भाजपा के क्षेत्रीय सहसंयोजक (व्यापार प्रकोष्ठ) रविन्द्र कुमार जायसवाल ने अज्ञात उपद्रवियों के खिलाफ जानलेवा हमले, वाहन में तोड़फोड़ और जान से मारने की कोशिश का मुकदमा दर्ज कराया है। एफआईआर में आरोप है कि भाजपा का झंडा लगी कार को रोककर हमला किया गया। सिविल लाइंस थाना क्षेत्र में भाजपा के क्षेत्रीय सहसंयोजक (व्यापार प्रकोष्ठ) रविन्द्र कुमार जायसवाल ने अज्ञात उपद्रवियों के खिलाफ जानलेवा हमले और वाहन में तोड़फोड़ का केस दर्ज कराया है। पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धाराओं 191(2), 324(4) और 109(1) के तहत एफआईआर दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। एफआईआर 26 जुलाई 2026 को सिविल लाइंस थाने में दर्ज की गई। भाजपा नेता रवींद्र कुमार जायसवाल ने आरोप लगाया है कि 25 जुलाई की शाम करीब पांच बजे वह अशोक नगर से लौट रहे थे। जैसे ही वह सुभाष चौराहे के पास पहुंचे थे कि वहां मौजूद बड़ी संख्या में अज्ञात उपद्रवियों ने उनकी कार को भाजपा का झंडा लगा होने के कारण रोक लिया। आरोप है कि हमलावरों ने कार में बैठे लोगों को जान से मारने की नीयत से हमला कर दिया। कार के शीशे तोड़ दिए और उन्हें वाहन से बाहर खींचने का प्रयास किया।

पद छोड़ने के बाद भी पूर्व प्रधानों से हो सकेगी वित्तीय नुकसान की वसूली

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने ग्राम पंचायतों में वित्तीय अनियमितताओं और सरकारी धन के दुरुपयोग को लेकर महत्वपूर्ण फैसला सुनाया है। अदालत ने स्पष्ट किया है कि ग्राम प्रधानों का कार्यकाल समाप्त हो जाने या पद छोड़ने के बाद भी उनके कार्यकाल के दौरान हुए वित्तीय नुकसान की वसूली उनसे की जा सकती है। वहीं, अदालत ने यह भी साफ किया है कि ऐसी किसी भी रिकवरी के लिए प्रशासन को कानून में दी गई निर्धारित प्रक्रिया और समय–सीमा का कड़ाई से पालन करना होगा। यह आदेश न्यायमूर्ति अजित कुमार और न्यायमूर्ति इंद्रजीत शुक्ला की पीठ ने प्रयागराज के एक पूर्व ग्राम प्रधान शिवपूजन तिवारी की ओर से दाखिल याचिका पर सुनवाई करते हुए दिया है।

डिप्टी सीएम केशव बोले– नकल माफिया है समाजवादी पार्टी, रद्द कर दिया था नकल अध्यादेश

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने पेपर लीक और नकल के मुद्दे पर समाजवादी पार्टी और कांग्रेस पर तीखा हमला बोला। उन्होंने सपा को शनकल माफियाश बताते हुए कहा कि विपक्ष को इस मुद्दे पर बोलने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है। साथ ही दावा किया कि 2027 के विधानसभा चुनाव में विपक्ष चाहे साथ लड़े या अलग–अलग, भाजपा की ही जीत होगी।

उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने पेपर लीक और नकल के मुद्दे पर समाजवादी पार्टी और कांग्रेस पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी और कांग्रेस को नकल तथा पेपर लीक के मामलों में बोलने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है। सपा नकल माफिया की राजनीति करती रही है।

मौर्य ने कहा कि भाजपा सरकार ने पेपर लीक के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाई है। दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जा रही है और आने वाले समय में पेपर लीक करने वालों को और भी सख्त सजा देने के लिए कानूनी प्रावधान किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि टास्क फोर्स का गठन किया गया है, फास्ट ट्रैक कोर्ट की व्यवस्था की जा रही है और संसद में इस संबंध में सख्त कानून लाने की प्रक्रिया चल रही है।

उन्होंने कहा कि नीट परीक्षा में गड़बड़ी सामने आने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सबसे पहले दोबारा परीक्षा कराने का निर्णय लिया गया। सरकार छात्रों का सम्मान करती है और उनकी चिंता को सर्वोच्च प्राथमिकता देती है। पेपर लीक रोकने के लिए विशेषज्ञों को शामिल कर व्यापक व्यवस्था तैयार की जा रही है।

डिप्टी सीएम ने कहा कि भाजपा सरकार में मुख्यमंत्री रहे कल्याण सिंह के कार्यकाल में नकल रोकने के लिए अध्यादेश लाया गया था, लेकिन समाजवादी पार्टी की सरकार बनने पर उसे रद्द कर दिया गया। उन्होंने आरोप लगाया कि सपा नकल कराकर लोगों को पास कराने की राजनीति करती रही है। उन्होंने कहा कि अखिलेश यादव और राहुल गांधी को इस मुद्दे पर सरकार को घेरने का कोई अधिकार नहीं है।

विपक्षी दल मिलकर लड़ें या अलग–अलग, खिलेगा कमल

2027 के विधानसभा चुनाव का जिक्र करते हुए मौर्य ने कहा कि सभी विपक्षी दल चाहे मिलकर चुनाव लड़ें या अलग–अलग, उत्तर प्रदेश में 2027 में भाजपा की ही जीत होगी और कमल फिर खिलेगा। कांवड़ यात्रा की तैयारियों पर उन्होंने कहा कि सरकार ने व्यापक इंतजाम किए हैं ताकि श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो। उन्होंने कहा कि यात्रा मार्ग पर पवित्रता और कानून–व्यवस्था बनाए रखने के लिए प्रशासन पूरी तरह सतर्क है।

हाल के आंदोलनों का उल्लेख करते हुए मौर्य ने आरोप लगाया कि कुछ स्थानों पर समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने माहौल बिगाड़ने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि मामले की जांच कराई जाएगी और यदि कोई हिंसा या अपराध में दोषी पाया गया तो उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई होगी। हालांकि, निर्दोष बच्चों पर दर्ज मुकदमों की समीक्षा कर उन्हें वापस लेने पर विचार किया जाएगा, लेकिन अपराधियों को किसी भी कीमत पर बख्शा नहीं जाएगा।

माफिया की संपत्ति पर बनेंगे स्कूल–कॉलेज व स्वास्थ्य केंद्र, अरबों की संपत्ति प्रशासन ने की है जब्त

प्रयागराज। जिले में अभियान चलाकर माफिया की संपत्तियों को चिह्नित और उन्हें जब्त करने की कार्रवाई चल रही है। हाल ही में जब्त की गई संपत्तियों पर जनहित में स्कूल–कॉलेज व स्वास्थ्य केंद्र बनाए जाने की तैयारी है।

जिले में अभियान चलाकर माफिया की संपत्तियों को चिह्नित और उन्हें जब्त करने की कार्रवाई चल रही है। हाल ही में जब्त की गई संपत्तियों पर जनहित में स्कूल–कॉलेज व स्वास्थ्य केंद्र बनाए जाने की तैयारी है। बीते दिनों मुख्यमंत्री ने कहा था कि माफिया से छुड़ाई गई जमीनों का उपयोग जनहित में किया जाएगा। वहां स्कूल–कॉलेज, स्वास्थ्य केंद्र, आंगनबाड़ी केंद्र बनाए जाएं और अन्य योजनाओं के तहत आम जनता को इसका लाभ दिया जाए।

इस क्रम में जिला प्रशासन ने माफिया अतीक, उसकी पत्नी शाइस्ता परवीन, भाई अशरफ व अन्य करीबी रिश्तेदारों की तकरीबन 345 करोड़ रुपये के अनुमानित मूल्य की संपत्तियां जब्त की हैं जिनमें मकान व जमीन शामिल हैं। तहसील सदर के एनुद्दीनपुर में माफिया अतीक की अलग–अलग नौ जमीनें जब्त की गई हैं। इनका क्षेत्रफल तकरीबन 13800 वर्ग मीटर है व अनुमानित मूल्य नौ करोड़ 96 लाख 74 हजार 865 रुपये है। वहीं, कौशाम्बी के चायल तहसील के रसूलाबाद उर्फ कोइलहा में 14602 वर्ग मीटर जमीन जब्त की गई है जिसकी अनुमानित कीमत 24 करोड़ रुपये है। इसके अलावा तहसील फूलपुर के हवेलिया में 18260 वर्ग मीटर व 11300 वर्ग मीटर के दो अलग–अलग भूखंड जब्त किए गए हैं जिनका अनुमानित मूल्य एक अरब 23 करोड़ 28 लाख 40 हजार रुपये है।

लखनऊ में भी मिला है भूखंड

इसके अलावा लखनऊ में भी 5160 वर्ग मीटर जमीन जब्त की गई है। वहीं, प्रयागराज व लखनऊ में मकान के रूप में भी व्यापक पैमाने पर संपत्तियां जब्त की गई हैं। इन संपत्तियों के जब्तीकरण के बाद कुर्की की कार्रवाई की जाएगी और राज्य सरकार में निहित होने बाद अलग–अलग योजनाओं के लिए आवंटित की जाएंगी। वहीं, पूर्व में एयरपोर्ट के आसपास के गांवों में कुर्क की गई माफिया अतीक व उसके करीबियों की तकरीबन ढाई हेक्टेयर जमीन को एयरपोर्ट के पास प्रस्तावित नई टाउनशिप एयरोसिटी के लिए उपयोग में लाने की तैयारी है।

पूर्व में राज्य सरकार में निहित की जा चुकी माफिया की जमीन को नई टाउनशिप के लिए शासन से मांगा गया है। हाल ही में जो संपत्तियां जब्त की गई हैं, निर्धारित प्रक्रिया के तहत उन्हें भी राज्य सरकार में निहित किए जाने के बाद विभिन्न योजनाओं के लिए उनका उपयोग किया जाएगा। आवश्यकतानुसार स्कूल, कॉलेज, स्वास्थ्य केंद्र, आंगनबाड़ी केंद्र व अन्य योजनाओं के तहत जमीन आवंटन के लिए शासन को प्रस्ताव भेजा जाएगा।' – मनीष कुमार वर्मा, जिलाधिकारी

विदेशी बाजार में बेदम हुआ दोआबा का लाल सुर्खा, कठिन दौर से गुज रहा इलाहाबादी अमरूद

प्रयागराज। दोआबा की शान जीआई टैग प्राप्त इलाहाबादी लाल सुर्खा अमरूद अपने सबसे कठिन दौर से गुजर रहा है। पैदावार कम होने से अब यह विदेशी बाजारों में बेदम हो चुका है। कभी अपनी खास मिठास, गुलाबी गूदे, बड़े आकार और कम बीज के कारण खाड़ी देशों और यूरोप के बाजारों में इसकी अलग पहचान थी।

दोआबा की शान जीआई टैग प्राप्त इलाहाबादी लाल सुर्खा अमरूद अपने सबसे कठिन दौर से गुजर रहा है। पैदावार कम होने से अब यह विदेशी बाजारों में बेदम हो चुका है। कभी अपनी खास मिठास, गुलाबी गूदे, बड़े आकार और कम बीज के कारण खाड़ी देशों और यूरोप के बाजारों में इसकी अलग पहचान थी।

प्रयागराज की मंडियों से विदेश तक जाने वाला लाल सुर्खा का निर्यात पिछले दो साल से ठप है। कृषि विपणन विभाग के अनुसार, वर्ष 2024–25 और 2025–26 में लाल सुर्खा का निर्यात नहीं हुआ। वर्ष 2023–24 में 17.25 मीट्रिक टन अमरूद विदेश भेजा गया था। एक समय प्रयागराज और कौशाम्बी के बागों से निकला लाल सुर्खा ओमान, संयुक्त अरब अमीरात (दुबई), कतर, बहरीन, सऊदी अरब, इंग्लैंड और नेपाल तक पहुंचता था।

वर्ष 2005 से 2015 के बीच हर सीजन में इसकी खेप विदेश भेजी जाती थी। पिछले दो दशक से पैदावार लगातार घटने से अब निर्यात पूरी तरह थम गया है। अमरूद की जगह चावल, मूंगफली और हरी मिर्च ने विदेशी बाजार में पकड़ मजबूत की है। पिछले वर्ष दोआबा के चावल (19,172.86 मीट्रिक टन), मूंगफली (398 मीट्रिक टन) और हरी मिर्च (86.10 मीट्रिक टन) का दुबई, कतर, ओमान और नेपाल में निर्यात किया गया था। कृषि विशेषज्ञों के मुताबिक, पुराने बागों का नवीनीकरण नहीं होना, तेजी से बढ़ता शहरीकरण, किसानों का अधिक लाभ देने वाली फसलों की ओर रुख, जलवायु परिवर्तन, अनियमित बारिश, कीट एवं रोगों का बढ़ता प्रकोप, कोल्ड चेन और आधुनिक पैक हाउस जैसी सुविधाओं का अभाव इस संकट की बड़ी वजह हैं। प्रयागराज और कौशाम्बी में बड़ी संख्या में अमरूद के बाग खत्म हो गए हैं। इसका रकबा लगातार कम होता जा रहा है। पिछले दो वर्षों में पैदावार में कमी और निर्यात योग्य गुणवत्ता वाले फलों की उपलब्धता घटने से लाल सुर्खा का निर्यात नहीं हो सका। विभाग किसानों को गुणवत्तापूर्ण उत्पादन, वैज्ञानिक बागवानी और निर्यात मानकों के प्रति जागरूक कर रहा है।

अपर आयुक्त को धमकी देने के आरोप में एफआईआर दर्ज, मंडलायुक्त कार्यालय में हंगामे का भी आरोप

प्रयागराज। प्रयागराज के मंडलायुक्त कार्यालय में अपर आयुक्त (न्यायिक) जयजीत कौर को कथित रूप से धमकाने, अभद्रता करने और सरकारी कार्य में बाधा डालने के मामले में कर्नलगंज थाने में पवन कुमार विश्वकर्मा और उसके 10–12 साथियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। पुलिस ने बीएनएस की विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

प्रयागराज के मंडलायुक्त कार्यालय में अपर आयुक्त (न्यायिक) जयजीत कौर को धमकाने और सरकारी कार्य में बाधा पहुंचाने के आरोप में कर्नलगंज थाने में केस दर्ज किया गया है। शिकायत के आधार पर पवन कुमार विश्वकर्मा और उसके 10–12 साथियों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की विभिन्न धाराओं में एफआईआर दर्ज कर पुलिस ने जांच शुरू कर दी है।

शिकायत के अनुसार 17 जुलाई 2026 को सुबह करीब 11 बजे आरोपी अपने साथियों के साथ मंडलायुक्त कार्यालय स्थित अपर आयुक्त (न्यायिक) के कक्ष में पहुंचे। आरोप है कि उन्होंने एक विचाराधीन मामले में अपने पक्ष में फैसला कराने के लिए दबाव बनाया। जब अपर आयुक्त ने कहा कि न्यायालय में निर्णय गुण–दोष के आधार पर होगा, तो आरोपियों ने कथित रूप से धमकी दी। अभद्र भाषा का प्रयोग किया और बाद में देख लेने की चेतावनी भी दी। शिकायत में यह भी कहा गया है कि आरोपियों ने मंडलायुक्त कार्यालय में नारेबाजी की, जिससे सरकारी कार्य बाधित हुआ और कार्यालय की गरिमा प्रभावित हुई। बताया गया कि आरोपी पवन कुमार विश्वकर्मा के खिलाफ पहले से भी हंडिया थाने में मारपीट, गाली–गलौज, धमकी तथा आबकारी अधिनियम से जुड़े दो मामले दर्ज हैं। साथ ही वर्ष 2022 में उसके विरुद्ध उत्तर प्रदेश गुंडा नियंत्रण अधिनियम के तहत कार्रवाई भी प्रस्तावित की गई थी। शिकायतकर्ता ने उसके आपराधिक इतिहास का हवाला देते हुए स्वयं के खिलाफ किसी अप्रिय घटना की आशंका भी जताई है। पुलिस ने मामले में भारतीय न्याय संहिता की धारा 221, 351(2), 352 और 3(5) के तहत मुकदमा दर्ज कर जांच उपनिरीक्षक अनुराग वर्मा को सौंपी है।

प्रयागराज से नैनीताल का सफर होगा आसान, काठगोदाम के लिए ट्रेन की तैयारी

प्रयागराज। प्रयागराज से नैनीताल के सबसे निकटतम रेलवे स्टेशन काठगोदाम के लिए एक ट्रेन चलाने की तैयारी शुरू हो गई है। इसके लिए उत्तर मध्य रेलवे (एनसीआर) की ओर से प्रस्ताव तैयार कर रेलवे बोर्ड को भेजने की प्रक्रिया शुरू हो गई है।

प्रयागराज से नैनीताल के सबसे निकटतम रेलवे स्टेशन काठगोदाम के लिए एक ट्रेन चलाने की तैयारी शुरू हो गई है। इसके लिए उत्तर मध्य रेलवे (एनसीआर) की ओर से प्रस्ताव तैयार कर रेलवे बोर्ड को भेजने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। प्रस्ताव के अनुसार, यह नई ट्रेन प्रयागराज से चलकर कासगंज, बदायूं, बरेली के रास्ते काठगोदाम तक का सफर तय करेगी। इस रेल सेवा के शुरू होने से संगम नगरी के यात्रियों को उत्तराखंड के कुमाऊं मंडल स्थित पर्यटन स्थलों तक पहुंचने में सुविधा मिलेगी। पिछले माह एनसीआर के महाप्रबंधक के साथ हुई क्षेत्र के सांसदों की महत्वपूर्ण बैठक में भी इस मुद्दे को प्रमुखता से उठाया गया था। बैठक के बाद रेलवे प्रशासन ने इस पर सकारात्मक रुख अपनाते हुए औपचारिक प्रस्ताव तैयार करने के निर्देश दिए थे। वर्तमान में प्रयागराज से काठगोदाम के लिए सीधी ट्रेन न होने के कारण यात्रियों को बरेली, रामपुर या मुरादाबाद से सड़क मार्ग का सहारा लेना पड़ता है या फिर ट्रेन बदलकर वहां से काठगोदाम की यात्रा तय करनी होती है। इस नई रेल सेवा के संचालन से न केवल श्रद्धालुओं और पर्यटकों का समय बचेगा, बल्कि प्रयागराज से बरेली और कासगंज की ओर जाने वाले अन्य यात्रियों को भी एक अतिरिक्त ट्रेन का विकल्प मिल जाएगा।

प्रयागराज से काठगोदाम के लिए सीधी ट्रेन चलाए जाने का प्रस्ताव उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय को मैंने भेजा है। अफसरों ने आश्वस्त किया है कि यह प्रस्ताव रेलवे बोर्ड को भेजा जा रहा है। – प्रवीण पटेल, सांसद फूलपुर

हत्या व जानलेवा हमले के चार दोषियों की सजा बरकरार, अपील खारिज

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने मिर्जापुर के 33 साल पुराने हत्या व जानलेवा हमले के मामले में चार दोषियों की सजा बरकरार रखते हुए अपील खारिज कर दी है। इसके साथ ही जमानत पर चल रहे चारों दोषियों को एक माह के भीतर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट की अदालत में आत्मसमर्पण कर शेष सजा भुगतने का आदेश दिया है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने मिर्जापुर के 33 साल पुराने हत्या व जानलेवा हमले के मामले में चार दोषियों की सजा बरकरार रखते हुए अपील खारिज कर दी है। इसके साथ ही जमानत पर चल रहे चारों दोषियों को एक माह के भीतर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट की अदालत में आत्मसमर्पण कर शेष सजा भुगतने का आदेश दिया है। यह आदेश विनय कुमार द्विवेदी और न्यायमूर्ति सिद्धार्थ की खंडपीठ ने बाबूखान और सात अन्य की अपील पर दिया है।

मिर्जापुर के कोतवाली देहात थाना क्षेत्र में वर्ष 1988 में गोलीबारी हुई थी। इस घटना में नौ लोग गोली लगने से घायल हुए थे, जबकि बदरुद्दीन की अस्पताल ले जाते समय मौत हो गई थी। मामले में सत्र अदालत ने सात आरोपियों को हत्या के आरोप से बरी करते हुए दंगा, घातक हथियार से लैस होकर बलवा और जानलेवा हमले के आरोप में दोषी ठहराया था। वहीं हाशिम खान को हत्या समेत अन्य धाराओं में दोषी ठहराते हुए आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई थी। इसके खिलाफ आरोपियों ने हाईकोर्ट में अपील दाखिल की थी।

अपील की सुनवाई के दौरान चार आरोपियों बाबू खान, सईद खान, जफरू खान और नजरू खान की मौत हो गई। इसके बाद उनके संबंध में अपील समाप्त हो गई। जीवित अपीलकर्ताओं मलिक खान, इरशाद खान, रुस्तम खान और हाशिम खान की अपील पर सुनवाई करते हुए हाईकोर्ट ने ट्रायल कोर्ट के फैसले में हस्तक्षेप से इन्कार कर दिया। कोर्ट ने कहा कि अभियोजन पक्ष के प्रत्यक्षदर्शी गवाहों के बयान और उपलब्ध साक्ष्यों से आरोप सिद्ध होते हैं। साक्ष्यों में ऐसी कोई गंभीर विसंगति नहीं है, जिससे ट्रायल कोर्ट के फैसले को गलत या कानून के विपरीत माना जाए।

संक्षिप्त

14 नई गौशालाओं का लोकार्पण, धर्मपाल सिंह बोले हर गौवंश पर अब 50 रुपये प्रतिदिन खर्च

लखनऊ (संवाददाता)। उत्तर प्रदेश सरकार ने गौसंरक्षण को लेकर अपनी योजनाओं का दायरा बढ़ाते हुए सोमवार को प्रदेश में 14 नई गौशालाओं का लोकार्पण किया। इस मौके पर पशुधन एवं दुग्ध विकास मंत्री धर्मपाल सिंह ने प्रेस वार्ता में दावा किया कि राज्य में वर्तमान समय में करीब 12 लाख निराश्रित गौवंश की देखभाल की जा रही है, जिस पर सरकार प्रतिदिन लगभग 8 करोड़ खर्च कर रही है। उन्होंने कहा कि सरकार ने गौशालाओं के संचालन के लिए मिलने वाली सहायता राशि भी बढ़ाई है। मंत्री ने बताया कि पिछली सरकार में एक गौवंश के भरण–पोषण के लिए प्रतिदिन 30 की सहायता दी जाती थी, जिसे मौजूदा सरकार ने बढ़ाकर 50 प्रतिदिन कर दिया है। उनके अनुसार, बढ़ी हुई राशि का उद्देश्य गौशालाओं में पशुओं के लिए बेहतर भोजन, चिकित्सा और अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराना है। धर्मपाल सिंह ने बताया कि सोमवार को प्रदेश के विभिन्न जिलों में 14 नई गौशालाओं का लोकार्पण किया गया। उनका कहना है कि इन गौशालाओं में चारा, स्वच्छ पेयजल, आवास, शेड और अन्य बुनियादी सुविधाओं की व्यवस्था की गई है, जिससे निराश्रित गौवंश के संरक्षण की क्षमता बढ़ेगी। सरकार के मुताबिक, प्रदेश की गौशालाओं में वर्तमान में करीब 12 लाख गौवंश संरक्षित हैं। इनकी देखभाल पर प्रतिदिन लगभग 8 करोड़ खर्च किए जा रहे हैं। मंत्री ने कहा कि सरकार का प्रयास गौवंश को सड़कों से हटाकर सुरक्षित आश्रय उपलब्ध कराने के साथ–साथ उनके संरक्षण की व्यवस्था को मजबूत करना है।

शारदा नहर में मिला अज्ञात व्यक्ति का शव, चार दिन से था लापता

लखनऊ (संवाददाता)। पारा स्थित शारदा नहर में सोमवार सुबह करीब 11.50 बजे एक व्यक्ति का शव पानी में तैरता मिला। शव दिखाई देने पर राहगीरों ने पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पारा थाना पुलिस ने स्थानीय लोगों की मदद से शव को नहर से बाहर निकलवाकर कब्जे में लिया और जांच शुरू कर दी। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, नहर किनारे से गुजर रहे लोगों की नजर पानी में उतराते शव पर पड़ी, जिसके बाद पुलिस को सूचना दी गई। पुलिस ने शव को बाहर निकलवाकर उसकी शिनाख्त कराने के प्रयास शुरू कर दिए हैं। पुलिस के अनुसार मृतक की पहचान धर्मेंद्र (45) पुत्र सियाराम, निवासी कोतवाली देहात, जनपद सीतापुर के रूप में हुई है। वह पिछले चार दिनों से घर से लापता था। मृतक के भाई रवि ने मौके पर पहुंचकर शव की शिनाख्त की। इसके बाद पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया। फिलहाल पुलिस मौत के कारणों का पता लगाने में जुटी है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के वास्तविक कारणों का पता चल पाएगा। पुलिस फिलहाल सभी पहलुओं पर गौर करते हुए मामले की जांच कर रही है। घटना के बाद क्षेत्र में विभिन्न तरह की चर्चाएं हो रही हैं।

आम के बाग में मिला युवक का शव

लखनऊ (संवाददाता)। काकोरी में सोमवार सुबह 25 वर्षीय युवक का शव आम के बाग में पेड़ से लटका मिला। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को नीचे उतरवाकर कब्जे में लिया और पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। शुरुआती जानकारी के मुताबिक युवक रविवार रात घर से निकला था, लेकिन वापस नहीं लौटा। सोमवार सुबह करीब सात बजे उसका शव पेड़ से लटका मिलने पर इलाके में लोग परेशान हो गए। पुलिस मामले की जांच कर रही है। मृतक की पहचान दुर्गागंज निवासी रोहित रावत उर्फ बउवा (25) के रूप में हुई है। रोहित मजदूरी करके अपने परिवार का भरण–पोषण करता था। रविवार रात वह घर से निकला था, लेकिन देर रात तक वापस नहीं लौटा। सोमवार सुबह जब वह घर नहीं आया, तो परिजनों ने उसकी तलाश शुरू की। इसी दौरान, रोहित के भाई विपिन ने दुर्गागंज चौराहे से आगे मलिहाबाद रोड किनारे स्थित प्रधान हीरालाल के आम के बाग में उसका शव देखा। रोहित का शव चारपाई की निवार के सहारे आम के पेड़ से लटका हुआ था। विपिन ने तुरंत परिजनों और पुलिस को घटना की सूचना दी। सूचना मिलते ही इंस्पेक्टर सतीश चंद्र राठौर पुलिस बल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे। फील्ड यूनिट को भी बुलाया गया, जिसने मौके का बारीकी से निरीक्षण कर आवश्यक साक्ष्य एकत्र किए। पुलिस ने परिजनों और ग्रामीणों की मौजूदगी में शव की फोटोग्राफी और वीडियोग्राफी कराई। इसके बाद शव को पेड़ से नीचे उतारकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया। इंस्पेक्टर सतीश चंद्र राठौर ने बताया कि प्रथम दृष्टया यह मामला आत्महत्या का लग रहा है। हालांकि, आत्महत्या के कारणों का अभी तक पता नहीं चल पाया है। पुलिस सभी संभावित पहलुओं से मामले की जांच कर रही है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी। मृतक रोहित अपने पीछे पिता कल्लू, तीन भाई विपिन, रंजीत और अमित, तथा दो विवाहित बहनें शशि और रोशनी को छोड़ गया है।

डिलीवरी बॉय ने की आत्महत्या, पंखे से लटका मिला शव

लखनऊ (संवाददाता)। मड़ियाँव थाना क्षेत्र में सोमवार सुबह 8 बजे फूड डिलीवरी कर्मी फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया और मामले की जांच शुरू कर दी है। मृतक की पहचान मोहम्मद तौफीक के रूप में हुई है, जो एक निजी फूड डिलीवरी कंपनी में कार्यरत था। परिजनों ने बताया कि घटना के समय घर में उसकी मां मौजूद थीं, जबकि पिता शहर से बाहर थे। तौफीक जिस कमरे में सोता था, उसी कमरे में उसका शव पंखे से लटका हुआ मिला। मृतक की मां रुबीना ने बताया कि घटना के समय वह किसी काम से बाहर गई थीं। जब वह लौटीं तो उन्होंने अपने बेटे को पंखे से लटका देखा, जिसके बाद उन्होंने अपनी बेटी को बुलाया और पुलिस को सूचना दी। मृतक के पिता मोहम्मद रफी उर्फ गुड्डू कारपेंटर का काम करते हैं और पिछले एक सप्ताह से शहर से बाहर हैं। उन्हें भी घटना की जानकारी दे दी गई है। मृतक की एक बड़ी बहन है जो मड़ियाँव क्षेत्र के गौस नगर में रहती है। बहन ने पुलिस को बताया कि तौफीक का अक्सर परिवार में अपनी बहन, भाई और मां से कमाई को लेकर विवाद होता रहता था, जिसके बाद उसने यह कदम उठाया। पुलिस ने बताया कि परिजनों से प्रारंभिक जानकारी ली गई है। साथ ही आसपास के सीसीटीवी फुटेज और अन्य तथ्यों की भी जांच की जा रही है। अधिकारियों का कहना है कि मौत के कारणों की पुष्टि पोस्टमार्टम रिपोर्ट और जांच पूरी होने के बाद ही हो सकेगी।

भयहरण नाथ धाम में सावन मेला के चलते सामाजिक सत्याग्रह स्थगित

29 जुलाई से बकुलाही नदी सफाई का श्रमदान, डीएम के आश्वासन के बाद टला सत्याग्रह, बकुलाही नदी की प्राचीन धारा के मुहाने का हुआ निरीक्षण

प्रतापगढ़। प्रसिद्ध पांडव कालीन भयहरण नाथ धाम में रविवार को आयोजित 20 वें सामाजिक सत्याग्रह में सर्वसम्मति से निर्णय हुआ कि सावन मेला के दौरान सत्याग्रह स्थगित रहेगा। जिलाधिकारी अभिषेक पांडेय द्वारा जल्द भयहरण नाथ धाम व बकुलाही के मुद्दों पर अपेक्षित प्रभावी सहयोग प्रदान किये जाने का निर्णय लिया गया है जिस पर सभी ने प्रसन्नता व्यक्त की। वहीं निर्णय हुआ कि बकुलाही नदी के प्राचीन धारा के मुहाने की सफाई हेतु सामूहिक श्रमदान 29 जुलाई बुधवार से प्रारंभ होगा।

भयहरण नाथ धाम क्षेत्रीय विकास संस्थान के महासचिव समाज शेखर के संयोजन में गत 15 मार्च से चल रहे 20 वें सामाजिक सत्याग्रह में सार्वजनिक रूप से तय हुआ कि सावन तक सत्याग्रह पूरी तरह स्थगित रहेगा। सावन मेला से पूर्व कार्यालय प्रभारी नीरज मिश्र को अध्यक्ष राज कुमार शुक्ल के मार्गदर्शन में प्रशासनिक कार्यालय में खिड़की व प्रकाश व्यवस्था दुरुस्त किये जाने तथा अन्य अपेक्षित व्यवस्था का निर्देश दिया गया।

बकुलाही नदी की प्राचीन

धारा के मुहाने की सफाई हेतु नगर पंचायत अध्यक्ष अशोक कुमार मुन्ना यादव के साथ बकुलाही पुनरोद्धार अभियान के संयोजक समाज शेखर व कार्यकर्ताओं के साथ नदी के मुहाने पर दोनों धाराओं का अवलोकन किया गया। स्पष्ट देखने को मिला कि अधिक बारिश होने पर जब पानी ऊपर उठेगा तभी कुछ जल प्राचीन धारा में प्रवाहित हो सकेगा।

इस अवसर पर प्रमुख रूप से अध्यक्ष राज कुमार शुक्ल, उपाध्यक्ष प्रशासन बबन सिंह, उपाध्यक्ष वित्त राजीव नयन मिश्र, प्राचीन धारा के मुहाने की सफाई करने से इधर भी 2 दर्जन से अधिक गांवों को इस बरसात में भरपूर पानी मिल सकेगा। तय किया गया कि 29 जुलाई से साझा श्रम व संसाधन से इस बरसात का पानी लेने हेतु सफाई हेतु श्रमदान प्रारंभ होगा।

प्रबन्ध समिति सदस्य जय प्रकाश सिंह, अवधेश मिश्र, प्रभाकर पांडेय, ज्ञान प्रसाद मिश्र, मनी राम पटेल, पतंजलि योग पीठ के अरुणेश अग्रहरि, किसान यूनियन अम्बावता के जिला प्रभारी जलालुद्दीन आदि शामिल रहे।

मिसाइल मैन को सीएम योगी और अखिलेश समेत कई नेताओं ने दी श्रद्धांजलि

लखनऊ (संवाददाता)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और समाजवादी पार्टी (सपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष

अखिलेश यादव समेत कई प्रमुख नेताओं ने सोमवार को प्रख्यात वैज्ञानिक और देश के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम की पुण्यतिथि पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, मिसाइल मैन, पूर्व राष्ट्रपति भारत रत्न डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम की पुण्यतिथि पर विनम्र श्रद्धांजलि। उन्होंने कहा, रक्षा व अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में भारत को वैश्विक स्तर पर नयी पहचान दिलाने के साथ ही राष्ट्र को परमाणु शक्ति संपन्न बनाने में उनका योगदान अभूतपूर्व है। योगी आदित्यनाथ ने कहा, उनकी दूरदर्शिता, सादगी एवं राष्ट्रसेवा के प्रति समर्पण युवाओं के लिए प्रेरणा है। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने एक्स पर कहा, भारत के पूर्व राष्ट्रपति, महान वैज्ञानिक भारत रत्न डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम जी की पुण्यतिथि पर विनम्र श्रद्धांजलि। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की उत्तर प्रदेश इकाई के अध्यक्ष और केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने कहा, भारत को रक्षा और विज्ञान का नया आकाश देने वाले पूर्व राष्ट्रपति, मिसाइल मैन डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम की पुण्यतिथि पर शत–शत् नमन। उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने एक्स पर एक पोस्ट में अब्दुल कलाम के एक कथन का उल्लेख करते हुए कहा, जीवन में सफलता का आनंद तभी आता है, जब वह सफलता कठिनाई से प्राप्त की जाती है।श्श मौर्य ने कहा, देश के पूर्व राष्ट्रपति, मिसाइल मैन के नाम से प्रसिद्ध महान वैज्ञानिक एवं भारत रत्न से सम्मानित डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम जी की पुण्यतिथि पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि। उन्होंने कहा, एक महान राष्ट्र–शिल्पी और दूरदर्शी वैज्ञानिक के रूप में देश के विकास, सुरक्षा और ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में दिया गया उनका अद्वितीय योगदान सदैव स्मरणीय रहेगा और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा। गौरतलब है कि कलाम 2002 से 2007 तक भारत के राष्ट्रपति रहे और अपने आचरण एवं व्यवहार के कारण उन्हें हर राजनीतिक दल का सम्मान प्राप्त था। उन्हें लोगों का राष्ट्रपति कहा जाता था, क्योंकि सर्वोच्च पद की जिम्मेदारियों के बावजूद वह आम जनता, खासतौर पर छात्रों से मिलने का वक्त निकाल लेते थे और यह आदत उनका कार्यकाल खत्म होने के बाद भी बनी रही। मिसाइल मैन के नाम से लोकप्रिय हुए कलाम का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को तमिलनाडु के रामेश्वरम में हुआ था और 27 जुलाई 2015 को उनका हृदयाघात के कारण निधन हो गया।

जनता की समस्याओं का समयबद्ध समाधान करें अधिकारी -केशव

लखनऊ (संवाददाता)। उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने प्रयागराज में जनता दर्शन कार्यक्रम में बड़ी संख्या में आए नागरिकों की समस्याओं को गंभीरतापूर्वक सुना। इस दौरान सड़क, नाली, पेयजल, चक पैमाइश, छात्रवृत्ति, विधवा पेंशन, वृद्धावस्था पेंशन, ईलाज हेतु आर्थिक

मदद सहित विभिन्न विभागों से संबंधित अनेक शिकायती प्रार्थना–पत्र प्राप्त हुए। श्री मौर्य ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि प्रत्येक प्रकरण का प्राथमिकता के आधार पर परीक्षण कर समयबद्ध, निष्पक्ष एवं गुणवत्तापूर्ण कार्रवाई की जाए। सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता आमजन को सुशासन, पारदर्शिता एवं त्वरित न्याय उपलब्ध कराना है। किसी भी पात्र व्यक्ति को शासन की योजनाओं का लाभ पाने में अनावश्यक विलंब अथवा असुविधा नहीं होनी चाहिए। जनता दर्शन के उपरांत उपमुख्यमंत्री ने जनप्रतिनिधियों, भारतीय जनता पार्टी के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं से भेंट कर विकास, संगठनात्मक गतिविधियों तथा जनहित के विभिन्न विषयों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने क्षेत्र में चल रही विकास परियोजनाओं की प्रगति की जानकारी प्राप्त की तथा आगामी विधानसभा चुनावों की तैयारियों को लेकर भी विस्तृत विचार–विमर्श किया। उन्होंने आह्वान किया कि वे केंद्र एवं प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को घर–घर तक पहुँचाने तथा जनता के बीच सरकार की उपलब्धियों को प्रभावी ढंग से रखने का कार्य करें। श्री मौर्य ने विपक्ष पर भी तीखा राजनीतिक प्रहार करते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी विकास, सुशासन और राष्ट्रहित की राजनीति करती है, जबकि विपक्ष केवल भ्रम फैलाने और नकारात्मक राजनीति करने में लगा हुआ है। उन्होंने विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि वर्ष 2027 के विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी का पूरी तरह से सूपड़ा साफ हो जाएगा, क्योंकि प्रदेश की जनता विकास, सुरक्षा और सुशासन के पक्ष में अपना समर्थन लगातार भारतीय जनता पार्टी को दे रही है।उन्होंने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर भी निशाना साधते हुए कहा कि संसद देश की सर्वोच्च लोकतांत्रिक संस्था है, जहाँ जनता से जुड़े महत्वपूर्ण विषयों पर सार्थक चर्चा होनी चाहिए। किंतु राहुल गांधी एवं उनके सहयोगी संसद की कार्यवाही को बाधित कर जनता के धन की बर्बादी कराते हैं। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में स्वस्थ बहस और रचनात्मक विपक्ष आवश्यक है, लेकिन संसद को बाधित करना जनता की अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं है।

गुरु पूर्णिमा पर शिष्य और गुरु दोनों भूमिका में दिखेंगे सीएम योगी

29 जुलाई को गोरक्षपीठ की परंपरानुसार होगा गुरु पूर्णिमा महोत्सव

लखनऊ (संवाददाता)। सनातन विचार दर्शन एवं संस्कृति में गुरु–शिष्य के रिश्ते को प्रतिष्ठित करने वाले पावन पर्व गुरु पूर्णिमा गोरक्षपीठ के लिए विशेष होती है। गुरु पूर्णिमा महोत्सव वह अवसर होता है जब गोरक्षपीठाधीश्वर, शिवावतार एवं नाथपंथ के आदिगुरु महायोगी गोरखनाथ सहित पीठ के अपने पूर्ववर्ती गुरुजन की पूजन–स्तुति करते हैं और तदुपरांत अपने शिष्यों और गोरक्षपीठ के श्रद्धालुओं को स्नेहाशीष से अभिसिंचित करते हैं। गोरक्षपीठ की इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए वर्तमान पीठाधीश्वर एवं मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ गुरु पूर्णिमा 29 जुलाई पर शिष्य और गुरु दोनों भूमिकाओं में दिखेंगे।गुरु पूर्णिमा पर्व और नाथपंथ का संबंध कितना अटूट और गहरा है, इसका अंदाजा इस पर्व पर गोरखनाथ मंदिर में होने वाले भव्य आनुष्ठानिक आयोजन को देखकर आसानी से लगाया जा सकता है। नाथ योगियों ने इस परंपरा की गरिमा और प्रतिष्ठा को पूरी श्रद्धा और समर्पण के साथ कायम रखा है। महायोगी गुरु गोरखनाथ से लेकर गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ तक ने न केवल इस परंपरा को समृद्ध किया है, बल्कि गुरु प्रतिष्ठा के प्रति लोगों को प्रेरित भी किया है। योगी आदित्यनाथ हर गुरु पूर्णिमा पर अपने गुरु का आशीर्वाद लेने और शिष्यों को आशीर्वाद देने के लिए गोरखनाथ मंदिर पहुंचते हैं।

बारिश करे निनाद

(कुण्डलिया)

बारिश से नदियाँ हुईं, जब भी थोड़ा सख्त।
पल भर में सबकुछ लुटा, मिला न उनको वक्त।
मिला न उनको वक्त, बाढ़ ने किस्मत लूटी।
लेकिन सच यह बात,भूल से हिम्मत छूटी।
वर्षा कहे प्रदीप,न समझो मेरी साजिश।
मौसम का है खेल, चली जाएगी बारिश।।

मानव ने की अनसुनी, नदियों की फरियाद।
बादल गरजा जोर से, बारिश करे निनाद।
बारिश करे निनाद, बाढ़ नदियों में आयी।
तोड़ सभी तटबन्ध,घरो तक पहुँचा पानी।
सुन लो कहें प्रदीप, देख दरिया का रौरव।
सुन दरिया से बात, अहं मत पालो मानव।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

जीवन में फिटनेस का महत्व कार्यक्रम

प्रयागराज। बलराम ग्रुप इंस्टीट्यूशंस द्वारा संचालित सिटीजन गर्ल्स कालेज में 'जीवन में फिटनेस का महत्व' विषय पर कार्यक्रम कराया गया। इस कार्यक्रम में फिटनेस कोच ममता सिंह जी एवं धर्मेन्द्र सिंह जी नें जीवन में स्वास्थ्य का महत्व, जीवन शैली में सकारात्मक बदलाव, नियमित व्यायाम के महत्व पर चर्चा

किया। साहित्य सरोज पत्रिका के संपादक अखण्ड प्रताप सिंह जी ने छात्राओं के कौशल विकास के विषय पर चर्चा किया। महाविद्यालय की प्रबंधिका श्रीमती उमा सिंह जी (कार्यक्रम कीअध्यक्ष) ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए छात्राओं को शुभाशीष दिया द्य महाविद्यालय में होने वाले स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम में डॉ मधुलिका सिंह (प्राचार्य), उमा लता पटेल (उप–प्राचार्य) एवं सहायक आचार्य डॉ शालिनी बेसेड़िया, डॉ. अंजुला तिवारी, अंजना गौड़, मनोज जी तथा सचिन श्रीवास्तव जी का सहयोग रहा।

न्याय के लिये मुख्यमंत्री आवास पर दस्तक दे सकती है अखण्ड आर्यावर्त महासभा

लखनऊ (संवाददाता)। अखण्ड आर्यावर्त आर्य त्रिदंडी महासभा ने आज यहां आगामी चार अगस्त को विधवा महिलाओं को न्याय दिलाने और आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही की मांग को लेकर होने जा रहे विरोध प्रदर्शन की तैयारी की समीक्षा करते हुये कहा कि लव एण्ड लैण्ड जिहाद मामले को पारिवारिक सम्पत्ति विवाद व कानूनी दांव–पेंच में उलझाने के कुत्सित प्रयासों को सफल नहीं होने दिया जायेगा। महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ऋषि त्रिवेदी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि हिन्दू परिवार की महिलाओं को न्याय दिलाने और आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्यवाही की मांग को लेकर यदि जरूरत पड़ी तो संगठन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ तक पीड़िताओं की आवाज पहुंचाने के लिये उनके आवास की चौखट पर दस्तक देने के लिये भी पूरी तरह तैयार है। श्री त्रिवेदी ने पीड़ित महिलाओं की शिकायत के बावजूद पुलिस प्रशासन पर आरोपियों के खिलाफ कार्यवाही न करने का आरोप लगाते हुये कहा कि पुलिस प्रशासन पीड़ित महिलाओं के साथ न्याय न कर आरोपियों को न सिर्फ बचा रही है बल्कि लव एण्ड लैण्ड जिहाद मामले को पारिवारिक सम्पत्ति विवाद और कानूनी दांव–पेंच के आवरणों से ढकने का प्रयास कर रही है। श्री त्रिवेदी ने साफ कहा कि मोनिश हसन ने कुचक्र रचकर जिस तरह प्रतिष्ठित कारोबारी हिन्दू पारिवार के दिवंगत मुखिया चन्द्र भूषण त्रिपाठी की बेटी को प्रेमजाल में फंसाकर उससे चोरीछिपे निकाह करने और कुछ ही वर्ष में चन्द्रभूषण त्रिपाठी और उनके दोनों पुत्रों विशाल और मनीष की मौत के बाद चन्द्रभूषण त्रिपाठी की पत्नी और पुत्रों की बहुओं के बीच पारिवारिक सम्पत्ति विवाद को जन्म देकर उनकी सम्पत्ति और कारोबार पर कब्जा जमा लिया। श्री त्रिवेदी ने कहा कि इस हिन्दू परिवार के सभी पुरूषों की मौत के बाद चन्द्रभूषण त्रिपाठी और बेटे मनीष त्रिपाठी की सम्पत्तियों पर कब्जा जमाने की नीयत से सम्पत्तियों की लिखा–पढ़ी की बारीकी से जांच होने से सारी सच्चाई सामने आ जायेगी।

प्रतिबंधित मांझे पर हाईकोर्ट में नहीं हुई सुनवाई,यूपी सरकार समेत 6 पक्षकार

लखनऊ (संवाददाता)। राजधानी लखनऊ में प्रतिबंधित घातक मांझे की बिक्री और इस्तेमाल पर रोक को लेकर दायर जनहित याचिका पर सोमवार को इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ पीठ में सुनवाई नहीं हो पाई। लखनऊ निवासी सैयद अली हसनैन आब्दी की ओर से दाखिल याचिका पर कोर्ट नंबर–1 में न्यायमूर्ति राजन राय और न्यायमूर्ति मंजीव शुक्ला की खंडपीठ के समक्ष सुनवाई के लिए सूचीबद्ध किया गया था। लेकिन वकीलों के मारपीट करके के मामले में सुनवाई होने की वजह से सोमवार को सुनवाई नहीं हो पाई। यह साल 2018 से जनहित याचिका के तौर पर दाखिल की गई थी। याचिका में उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ मंडल के आयुक्त, पुलिस महानिदेशक, जिलाधिकारी लखनऊ, पुलिस आयुक्त लखनऊ और थाना प्रभारी चौक को प्रतिवादी बनाया गया है। याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता राजेश कुमार कश्यप पैरवी कर रहे हैं, जबकि राज्य सरकार की ओर से मुख्य स्थायी अधिवक्ता (सीएससी) पक्ष रखना है। ऑनलाइन केस स्टेटस के मुताबिक, अभी तक इस जनहित याचिका में कोई अंतिम आदेश अपलोड नहीं हुआ है। ऐसे में सोमवार को होने वाली सुनवाई के दौरान हाईकोर्ट के आदेश के बाद ही मामले का निस्तारण हो पाएगा। कोर्ट की लिस्टिंग हिस्ट्री के अनुसार यह मामला 17 फरवरी, 11 मार्च, 20 अप्रैल, 27 अप्रैल, 11 मई, 13 जुलाई और अब 27 जुलाई 2026 को सुनवाई के लिए सूचीबद्ध किया गया है। 11 मई और 13 जुलाई की सूची में पर्सनल अपीरियंस और पहले से इसलिए लिस्टेड का भी उल्लेख किया गया था।

सम्पादकीय.....

ताज महल से जुड़ा कानूनी विवाद क्या है?

17वीं शताब्दी का मकबरा, ताज महल एक बार फिर सुर्खियों में है। इस महीने की शुरुआत में, इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने केंद्र और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ए.एस.आई.) को नोटिस जारी कर आगरा की एक निचली अदालत के उस आदेश को चुनौती देने वाली याचिका पर उनका जवाब मांगा था, जिसमें ताज महल के सर्वेक्षण से इंकार कर दिया गया था। न्यायमूर्ति रोहित रंजन अग्रवाल की पीठ ने अधिवक्ता हरिशंकर जैन द्वारा दायर एक याचिका पर यह आदेश पारित किया, जिसमें तर्क दिया गया था कि ताज, जो एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्मारक है, वास्तव में 'तेजो महालय' है। जैन ने यह घोषणा करने की मांग की कि ताज महल एक हिंदू मंदिर है और हिंदुओं के लिए वहां पूजा–अर्चना करने की अनुमति मांगी। याचिकाकर्त्ताओं ने स्मारक का निरीक्षण करने के लिए एक एडवोकेट कमिश्नर की नियुक्ति की भी मांग की। मुगल सम्राट शाहजहां द्वारा अपनी पसंदीदा पत्नी अर्जुमंद बानो के मकबरे के रूप में निर्मित, ताज महल को पूरा होने में 22 साल लगे। मुख्य वास्तुकार उस्ताद अहमद लाहौरी की देखरेख में निर्मित, पहली बार इसे विवाद का सामना तब करना पड़ा, जब पश्चिम में कई लोगों द्वारा यह दावा किया गया कि ताज के वास्तुकार वेनेशियन गेरोनिमो वेरोनियो थे, जो पेशे से एक जौहरी थे। वह 17वीं शताब्दी की बात थी। फिर तारीख–ए–ताज महल में मुगल बेग का दावा आया कि ताज को तुर्की के सुल्तान द्वारा कथित रूप से भेजे गए एक वास्तुकार मुहम्मद एफेंडी ने डिजाइन किया था। हालांकि, एफेंडी वास्तुकार नहीं थे, जैसा कि बाद के खुलासों से साबित हुआ। पी.एन. ओक का दावा क्या था रू फिर 19वीं शताब्दी के मध्य में, यह दावा किया गया कि यह स्मारक फ्रांसीसी ऑस्टिन डी बोर्डो की प्रतिभा का परिणाम था, जो पेशे से एक जौहरी थे। हालांकि, ऑस्टिन की मृत्यु 1632 में हो गई, जिस वर्ष ताज पर काम शुरू हुआ था।मध्यकालीन भारत के किसी भी इतिहासकार ने ताज के मुगल सम्राट शाहजहां की पत्नी का मकबरा होने के तथ्य का खंडन नहीं किया है। इसमें इरफान हबीब और अतहर अली जैसे प्रख्यात इतिहासकारों के अलावा सतीश चोपड़ा और सैयद अली नदीम रजावी जैसे उल्लेखनीय नाम शामिल हैं। मकबरे की प्रामाणिकता पर आक्षेप लगाने वाले पहले व्यक्ति एक गैर–इतिहासकार, पी.एन. ओक थे, जो एक शिक्षक से वकील और फिर पत्रकार बने थे, जिन्होंने 1965 में अपनी पुस्तक 'ताज महल इज ए टैम्पल पैलेस' के माध्यम से दावा किया था कि ताज मूल रूप से 4वीं शताब्दी में निर्मित एक राजपूत महल था। 1989 में, ओक ने अपनी राय को संशोधित किया और दावा किया कि यह मूल रूप से 12वीं शताब्दी की शुरुआत में बनाया गया एक हिंदू मंदिर था। फिर से, उन्होंने अपने तर्क को पुख्ता करने के लिए एक पुस्तक, 'ताज महल रू द ट्रू स्टोरी' लिखी। यह पहली बार था, जब किसी ने इस स्मारक को किसी हिंदू देवता से जोड़ा था। साक्ष्यों के अभाव में इतिहासकारों ने उनके दावों को साख के लायक न मानते हुए खारिज कर दिया। ओक का दावा, हालांकि, उच्चतम न्यायालय में सुना गया था, जिसने इसे 2000 में सिरे से खारिज कर दिया था। फिर कौन सी कानूनी चुनौतियां आईं रू 2005 में, अयोध्या सद्भावना समिति के सदस्य अमरनाथ मिश्रा इलाहाबाद उच्च न्यायालय गए और दावा किया कि ताज 1189 में चंदेल शासकों द्वारा बनाया गया एक मंदिर था। अदालत ने उनके तर्क को भी खारिज कर दिया। विरोधियों ने हार नहीं मानी। 2015 में, आगरा की एक निचली अदालत में दायर एक सिविल मुकद्दमे में ताज महल को हिंदू मंदिर घोषित करने की मांग की गई। अदालत हालांकि इस दावे से सहमत नहीं हुई। ताज परिसर के सर्वेक्षण का आदेश देने से इंकार करने के बाद, जैसा कि ज्ञानवापी और भोजशाला में आदेश दिया गया था, याचिकाकर्त्ता इलाहाबाद उच्च न्यायालय पहुंचे। इसके बाद अदालत ने केंद्र सरकार और ए.एस.आई. से जवाब मांगा। 2017 में, ए.एस.आई. ने स्पष्ट रूप से कहा था कि ताज 17वीं शताब्दी का मकबरा था। इसके निर्माण और डिजाइन में इस्तेमाल की गई तकनीक, जिसमें 'पिएत्रा दुरा' शामिल है, पूर्व–मध्यकालीन दिनों में मौजूद नहीं थी। इसे विवाद के किसी भी अवशेष को समाप्त कर देना चाहिए था। हालांकि, 2022 में उच्चतम न्यायालय में एक भाजपा नेता द्वारा एक जनहित याचिका (पी.आई.एल.) दायर की गई थी। इसे भी खारिज कर दिया गया। 2 साल बाद, कुछ कार्यकर्त्ताओं ने ताज में गंगाजल चढ़ाने की कोशिश की। वह प्रयास भी नाकाम कर दिया गया। अब, इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले के बाद, गेंद एक बार फिर ए.एस.आई. के साथ–साथ केंद्र के पाले में है।

जंतर-मंतर आंदोलन कई खतरनाक सवाल भी खड़े करता है!

तरुण विजय

शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे से आशा है कि अब हालात में सुधार होगा। दिल्ली में जो हुआ, उसमें बहुत से ऐसे छात्र भी थे, जिनको वास्तविक और सच्ची शिकायतें थीं। वे ईमानदारी से यह सोच कर आए, कई अपने पिता और माता के साथ भी पहुंचे, कि यह वास्तविक छात्र आंदोलन है। उनका दुख और वेदना एक पिता ही समझ सकता है। वे बच्चे अपनी जी–जान लगाकर मेहनत करते हैं, लेकिन विद्यालयों में शिक्षा होती नहीं, अध्यापक कोचिंग क्लासेज के संचालन में रुचि लेते हैं। वहां हजारों रुपए फीस देकर अलग से पढना पड़ता है और फिर पेपर लीक होने की लगातार घटनाओं से, जो अनेक प्रांतों में हो रही हैं, बच्चे की मेहनत पर पानी फिर जाता है। वे किसके पास जाएं? उनके माता–पिता और बच्चे किसी नेता या अफसर के पास नहीं जा सकते। उनके चारों ओर का वातावरण ऐसा है कि हर नेता चाहे वह किसी भी पार्टी का हो, केवल एक पहचान से जाना जाता है–अहंकार, पद और पैसे का असीम ऐश्वर्य, जो न कभी मिलते हैं, न फोन उठाते हैं, न उनके सचिव, उप–सचिव ढंग से बात करते हैं और उनके साथ देशी–विदेशी गाडियों का काफिला, मल्टीप्लैक्स–अपार्टमैंट्स की संपदा जुड़ी रहती है। किसी अध्यापक, दुकानदार, सामान्य नौकरी या व्यवसाय करने वाले की उन तक पहुंच का सवाल ही नहीं उठता। उस पर अच्छे अंक लाने पर भी आरक्षण का भेदभाव बच्चे का मनोबल तोड़ देता है । वह देखता है कि उससे आधे से भी कम अंक लाने वाला उससे बेहतर कालेज और उसके बाद उससे बेहतर नौकरी पा लेता है। कालेज ही नहीं, जाति का आरक्षण ही नहीं, बल्कि प्रदेश का निवासी होने का आरक्षण भी एक प्रांत से दूसरे प्रांत के बीच भेदभाव बढ़ाता है। फिर वह अपनी आंखों से देखता है कि हर मंत्री, सांसद, विधायक के बच्चे विदेश पढने गए हैं। आई.ए.एस., आई.पी.एस. अफसरों के बच्चों का भी यही शौक है। सवाल उठता है कि जो आरक्षण का भी हकदार नहीं है और जो विदेश भी नहीं जा सकता, उसका क्या होगा? माता–पिता जमीन–जायदाद गिरवी रखकर, बेचकर अपने सुख कम करके बच्चे के भविष्य के लिए सब कुछ करने को तैयार रहते हैं। सब जानते हैं कि आजकल नगर–नगर में युवाओं का 'भारत छोड़ो' आंदोलन चल रहा है। न्यूजीलैंड, कनाडा, आस्ट्रेलिया, यूक्रेन, कजाखस्तान, चीन, यहां तक कि ईरान में भी हजारों की संख्या में भारतीय छात्र पढने जाते हैं। क्या किसी अधिकारी या नेता ने बाकी सब काम छोड़कर इस विषय पर सोचा कि ऐसा क्यों होता है और छात्रों तथा उनके अभिभावकों को इस भयंकर तनाव तथा संत्रास से मुक्त करने का मार्ग क्या हो सकता है? जब तक वे धरना, प्रदर्शन, अनशन न करें, उनमें से अनेक तो हर सीमा तोड़कर भी बढ़ जाते हैं, तब तक न कोई समाधान की बात करता है न बात करने आता है। यही सबसे बड़ा दुख है। 22 बच्चों ने आत्महत्या कर ली। कोई उनके माता–पिता से पूछने गया? 15–18–20 साल का बच्चा जब अपनी जान लेना तय करता है तो धरती फट जानी चाहिए। पर उस शहर के अफसर, नेता, विधायक, सांसद, मंत्री किसी को इस बात की वेदना नहीं होती कि ऐसा क्यों हुआ और यदि हुआ तो उसके समाधान के लिए वह मिथ्या चाटुकारिता छोड़कर आवाज उठाए, जहां तक उसकी ऊपर आवाज जा सके वहां तक जाए। पर वे बच्चे पर ही दोष मढ़ते रहे, उन्हें व्यवस्था में कोई दोष नहीं दिखा। बालीवुड से लेकर दक्षिण की सब फिल्मों में पुलिस का जो चित्रण होता है, वह सरकार का सैंसर बोर्ड ही पास करता है । उनमें पुलिस को बर्बर, निर्दयी, धनवानों और नेताओं की दलाल दिखाया जाता है। सरकार ही पुलिस की ऐसी छवि बनने की अनुमति देती है, फिर अपेक्षा करती है कि पुलिस की बर्बरता का शिकार होने वाले बच्चे पुलिस के सामने हाथ जोड़कर खड़े हो जाएं। यह सच है कि जम्मू–कश्मीर और पंजाब पुलिस ने आतंकवादियों के खिलाफ बहुत कठिन युद्ध जान हथेली पर रखकर लड़ा। उसका सम्मान होना चाहिए, पर न तो हम पुलिस सुधार करना चाहते हैं और न ही अफसरशाही और न्यायपालिका में परिवर्तन लाते हैं। संत्रस्त नागरिक निराश और कुंठित होकर क्रुद्ध ही तो हो सकता है। छोटे बच्चों–बच्चियों में इतना ज्यादा क्रोध क्यों आया, इसका कारण समझना कठिन नहीं। जिन लोगों ने जंतर–मंतर आंदोलन के समाचार नजदीक से देखे हैं, उनके सामने अनेक खतरनाक सवाल भी खड़े हुए हैं। जिस प्रकार स्कूल–कालेज जाने वाली बच्चियों ने अपशब्द और अश्लील शब्द बोले, पढ़ी–लिखी महिलाओं ने वीडियो पर कहा कि अगर तुमको पुलिस वाला दिखे तो उसको थप्पड़ मारो, उसकी वर्दी फाड़ दो, जमाते इस्लामी और अनेक जिहादी संगठनों द्वारा वहां भोजन परोसा गया, विदेशों से हजारों थाली भोजन के आर्डर आए, जिस तरह से निहंगों ने पंजाब में एक पंजाबी महिला को घेर कर उस पर हमला किया था, परंतु उसकी जिन्होंने कभी ड्क्षनदा या विरोध नहीं किया, वैसे लोग जंतर–मंतर पर गाडियों के ऊपर तलवार भांजते हुए सरकार और पुलिस के खिलाफ नारे लगा रहे थे, हिन्दू देवी–देवताओं का अपमान कर रहे थे, प्रधानमंत्री को अपशब्द बोल रहे थे एवे नीट परीक्षा से त्रस्त छात्र नहीं थे। यह गहरी जांच का विषय है। ये बातें अभिभावकों द्वारा बच्चों के पालन–पोषण पर भी सवाल खड़ा करती हैं। एक ओर जम्मू–कश्मीर में हवलदार अशफाक हुसैन भारत माता की रक्षा करते हुए शहीद हो जाता है, दूसरी तरफ शिक्षा पद्धति से सच्चाई में त्रस्त छात्रों के साथ अनेक प्रकार के तत्व मिलकर एक नया नैरेटिव बना देते हैं। अगर यह स्थिति भी हमें कठोर आत्मनिरीक्षण तथा व्यवहार और आचरण में परिवर्तन की ओर न ले जाए, तो इस देश की रक्षा करना कठिन होगा।

सूखे मेवे और मसालों की दुनिया: स्वाद, स्वास्थ्य और संस्कृति का अनुपम संगम

भोजन केवल पेट भरने का साधन नहीं, बल्कि स्वास्थ्य, संस्कृति और प्रकृति से जुड़ने का माध्यम है। और इस माध्यम को पूर्णता प्रदान करते हैंकृ सूखे मेवे और मसाले।

प्रस्तावनाः जहाँ स्वाद मिलता है सेहत से

जब किसी रसोई से दालचीनी की भीनी–भीनी महक, इलायची की मधुर सुगंध और घी में भुने काजू–बादाम की खुशबू आती है, तो मन अनायास ही उस ओर खिंचा चला जाता है। भारतीय रसोई का यह अद्भुत संसार केवल स्वाद तक सीमित नहीं है, बल्कि स्वास्थ्य, परंपरा और समृद्धि की एक जीवंत कहानी भी कहता है।

सूखे मेवे और मसाले प्रकृति के ऐसे अनमोल उपहार हैं जिन्होंने सदियों से मानव जीवन को पोषण, ऊर्जा और औषधीय गुणों से समृद्ध किया है। भारत को ष्मसालों की धरतीष कहा जाता है, क्योंकि यहाँ की मिट्टी में ऐसी विविधता है जिसने दुनिया को स्वाद का नया अर्थ सिखाया। यही कारण है कि भारतीय मसालों की सुगंध ने कभी विश्व के व्यापारिक मार्गों की दिशा बदल दी थी।

सूखे मेवेः प्रकृति का ऊर्जा–भंडार

सूखे मेवे केवल स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ नहीं, बल्कि पोषण के खजाने हैं। इनमें प्रोटीन, स्वस्थ वसा, विटामिन, खनिज, फाइबर और एंटीऑक्सीडेंट प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। यही कारण है कि इन्हें ष्सुपरफूडष की श्रेणी में रखा जाता है।

प्रमुख सूखे मेवे और उनके गुण

बादाम – स्मरण शक्ति और मस्तिष्क के विकास के लिए लाभकारी माना जाता है।

अखरोट – ओमेगा–3 फैटी एसिड से भरपूर, हृदय और मस्तिष्क के स्वास्थ्य का साथी।

काजू – ऊर्जा, आयरन और प्रोटीन का अच्छा स्रोत।

पिस्ता – फाइबर और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर, पाचन और हृदय के लिए उपयोगी।

किशमिश – प्राकृतिक मिठास के साथ आयरन और पोटैशियम का उत्कृष्ट स्रोत।

खजूर – तुरंत ऊर्जा प्रदान करने वाला पौष्टिक फल।

इनका नियमित एवं संतुलित सेवन शरीर को शक्ति, रोग प्रतिरोधक क्षमता और मानसिक स्फूर्ति प्रदान कर सकता है।

स्वस्थ शरीर ही जीवन की सबसे बड़ी पूँजी है, और स्वस्थ आहार उसकी सबसे मजबूत नींव।

मसाले : भारतीय रसोई की आत्मा

यदि सूखे मेवे भोजन को समृद्ध बनाते हैं, तो मसाले उसमें जीवन का संचार करते हैं। हल्दी, जीरा, धनिया, दालचीनी, लौंग, इलायची, काली मिर्च, सौंफ, मेथी और तेजपत्ता जैसे मसाले भारतीय व्यंजनों की पहचान हैं।

इनकी सुगंध केवल भूख नहीं जगाती, बल्कि मन को भी आनंदित करती है। यही कारण है कि भारतीय भोजन की पहचान विश्वभर में उसके मसालों के कारण है।

स्वाद के साथ औषधीय गुण

भारतीय आयुर्वेद में मसालों को औषधि का दर्जा दिया गया है।

हल्दी – रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने और सूजन कम करने में सहायक मानी जाती है।

अदरक – पाचन सुधारने

और सर्दी–जुकाम में राहत देने के लिए प्रसिद्ध है।

दालचीनी – रक्त शर्करा के संतुलन में सहायक मानी जाती है।

काली मिर्च – पाचन शक्ति बढ़ाने और अन्य पोषक तत्वों के अवशोषण में मदद करती है।

लौंग – दाँत और गले की तकलीफ में पारंपरिक रूप से उपयोग की जाती है।

इलायची – मुँह की ताजगी और पाचन के लिए लाभकारी मानी जाती है।

इस प्रकार भारतीय रसोई वास्तव में एक प्राकृतिक औषधालय का स्वरूप भी प्रस्तुत करती है।

भारत : मसालों की ऐतिहासिक धरती

प्राचीन काल में भारतीय मसालों की माँग इतनी अधिक थी कि अरब, पुर्तगाल, डच और अंग्रेज व्यापारी समुद्री मार्गों से भारत पहुँचे। काली मिर्च को कभी ष्काला सोनाष कहा जाता था।

आज भी भारत विश्व के प्रमुख मसाला उत्पादक और निर्यातक देशों में गिना जाता है। केरल की काली मिर्च, कश्मीर का केसर, राजस्थान का जीरा और गुजरात का धनिया विश्व बाजार में अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं।

त्योहारों की मिठास और परंपराओं की खुशबू

भारतीय संस्कृति में सूखे मेवे और मसाले केवल भोजन का हिस्सा नहीं, बल्कि शुभता और समृद्धि के प्रतीक हैं।

दीपावली की मिठाइयाँ, ईद की सेवइयाँ, होली की गुजिया, विवाह समारोहों के व्यंजन और धार्मिक प्रसादकृइन सबकी कल्पना इनके बिना अधूरी है।

अतिथि के स्वागत में सूखे मेवों का उपहार देना सम्मान और आत्मीयता का प्रतीक माना जाता है।

अतिथि सत्कार की मिठास और भारतीय व्यंजनों की पहचान, दोनों में सूखे मेवे और मसालों की सुगंध बसती है।

आधुनिक जीवन में बढ़ती उपयोगिता

आज स्वास्थ्य के प्रति बढ़ती जागरूकता ने लोगों को प्राकृतिक खाद्य पदार्थों की ओर आकर्षित किया है। जंक फूड की जगह बादाम, अखरोट, मखाना और किशमिश जैसे पौष्टिक विकल्प लोकप्रिय हो रहे हैं।

इसी प्रकार, कृत्रिम फ्लेवर की बजाय ऑर्गेनिक और शुद्ध मसालों का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। आधुनिक वैज्ञानिक शोध भी इनके अनेक स्वास्थ्य लाभों की ओर संकेत करते हैं।

अर्थव्यवस्था की मजबूत कड़ी

सूखे मेवों और मसालों का व्यापार केवल किसानों और व्यापारियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह देश की अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण आधार भी है। मसालों के निर्यात से विदेशी मुद्रा अर्जित होती है तथा लाखों लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिलता है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग, पैकेजिंग और निर्यात व्यवसाय भी इससे जुड़े हुए हैं।

संतुलन ही स्वास्थ्य का रहस्य

हर अच्छी वस्तु का लाभ तभी मिलता है जब उसका उपयोग संतुलित मात्रा में किया जाए।

सूखे मेवों में कैलोरी अधिक होती है, इसलिए इनका सीमित सेवन उचित है। इसी प्रकार मसालों का अत्यधिक उपयोग पाचन संबंधी समस्याएँ उत्पन्न कर सकता है। शुद्ध, गुणवत्तापूर्ण और संतुलित मात्रा में इनका सेवन ही सर्वोत्तम माना जाता है।

उपसंहार : स्वाद और स्वास्थ्य का स्वर्णिम मेल

सूखे मेवे और मसाले केवल खाद्य पदार्थ नहीं हैं; वे भारतीय संस्कृति, परंपरा, आयुर्वेद और समृद्ध जीवनशैली के जीवंत प्रतीक हैं। वे हमारे भोजन को स्वाद देते हैं, शरीर को शक्ति देते हैं, रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ाते हैं और हमारी सांस्कृतिक विरासत को पीढ़ी–दर–पीढ़ी आगे बढ़ाते हैं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम फास्ट फूड और कृत्रिम स्वादों की दुनिया से बाहर निकलकर प्रकृति द्वारा दिए गए इन अनमोल उपहारों को अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाएँ।

जहाँ भोजन में शुद्ध मसालों की सुगंध और सूखे मेवों का पोषण हो, वहाँ स्वास्थ्य, स्वाद और समृद्धि स्वयं अपना घर बना लेते हैं।

वास्तव में, सूखे मेवे और मसालों की दुनिया केवल स्वाद की नहीं, बल्कि स्वास्थ्य, संस्कृति, परंपरा और समृद्धि की ऐसी अनमोल विरासत है, जिस पर हर भारतीय को गर्व होना चाहिए।

(आलेखः राजेश कुमार ओझा, विसावा ग्रुप, 9140588428)

इन्फॉसिस का नया चैप्टर

भारत की सबसे बड़ी आईटी कपंनियों में से एक इन्फॉसिस लिमिटेड में एक नया चैप्टर शुरू होने वाला है। इसका मुख्यालय बेंगलुरु में है लेकिन दुनिया भर में इसकी मौजूदगी है। अनुसंधान के मामले में इन्फॉसिस ने एक मुख्य पहल आर एण्ड डी कारपोरेट बनाकर की है जो साफ्टवेयर इंजीनियरिंग तथा प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला कहलाती है। अब देश की दूसरी सबसे बड़ी आईटी कंपनी इन्फोसिस में लीडरशिप का एक नया चैप्टर शुरू होने जा रहा है। कंपनी ने अपने दिग्गज अधिकारी आशीष कुमार दाश को अपना मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) नियुक्त किया है। आशीष 1 अप्रैल 2027 को मौजूदा सीईओ सलिल पारेख की जगह लेंगे। पारेख का 9 साल का सफल कार्यकाल उस वक्त पूरा हो रहा है।

आशीष कुमार दाश इन्फोसिस के लिए कोई नया नाम नहीं हैं। उन्होंने इस कंपनी में तीन दशक (30 साल) से ज्यादा का वक्त बिताया है। आशीष की लिंक्डइन प्रोफाइल के मुताबिक, उन्होंने देश के प्रतिष्ठित संस्थान आईआईटी खड़गपुर से ग्रेजुएशन किया है। इसके अलावा उन्होंने स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी से ग्लोबल लीडरशिप प्रोग्राम और लंदन बिजनेस स्कूल से सीनियर एग्जीक्यूटिव प्रोग्राम भी पूरा किया है। आशीष फिलहाल अमेरिका के लॉस एंजिल्स में तैनात हैं। लेकिन सीईओ की कुर्सी संभालने से पहले वो वापस भारत लौट आएंगे। फिलहाल वे कंपनी में एग्जीक्यूटिव वाइस प्रेसिडेंट और ग्लोबल हेड (सर्विसेज, यूटिलिटीज, रिसोर्सेज, एनर्जी और एंटरप्राइज सस्टेनेबिलिटी) की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। वे फॉर्च्यून 500 और ग्लोबल 2000 कंपनियों को नई डिजिटल तकनीक और एआई अपनाने में मदद करते हैं। इन्फोसिस के बोर्ड की नॉमिनेशन और रेम्यूनरेशन कमेटी की सिफारिश के बाद आशीष को सीईओ डेजिग्नेट नियुक्त किया गया है। शेयरधारकों की मंजूरी के बाद 1 अप्रैल 2027 से उनका 5 साल का कार्यकाल शुरू होगा, जो 31 मार्च 2032 तक चलेगा। आशीष ऐसे समय में कमान संभालने जा रहे हैं, जब ग्लोबल टेक इंडस्ट्री तेजी से बदल रही है। उनके सामने कई बड़े चैलेंज होंगे, जैसे अब क्लाइंट्स सिर्फ आउटसोर्सिंग नहीं, बल्कि अपने बिजनेस में ठोस नतीजे चाहते हैं. इन्फोसिस को आईएक्स की रेस में सबसे आगे रखना आशीष का पहला टास्क होगा. कंपनी की पहली तिमाही की कमाई में 8. 2 फीसद हिस्सा एआई सर्विसेज से ही आया है। उन्हें नए एआई टैलेंट को तराशने और उभरती तकनीकों में निवेश बढ़ाने पर फोकस करना होगा। इसके साथ ही रिटेल और कम्युनिकेशंस जैसे सेक्टर्स अभी धीमे चल रहे हैं। वहां ग्रोथ वापस लाना और दुनियाभर की कंपनियों के घटते टेक–बजट के बीच इन्फोसिस का प्रॉफिट मार्जिन बनाए रखना उनकी लीडरशिप का असल इम्तिहान होगा। इतना ही नहीं दुनिया भर में छाई आर्थिक अनिश्चितता, अमेरिका की सख्त वीजा पॉलिसी और देशों के बीच जियो–पॉलिटिकल टेंशन भी आईटी सेक्टर के लिए बड़ा सिरदर्द बने हुए हैं, जिनसे आशीष को निपटना होगा। हाल ही में इन्फोसिस ने जून तिमाही के नतीजे जारी किए हैं। कंपनी का नेट प्रॉफिट 12.2 फीसद बढ़कर 7769 करोड़ रुपये हो गया है। हालांकि, ग्लोबल मार्केट की अनिश्चितता को देखते हुए कंपनी ने पूरे साल की रेवेन्यू ग्रोथ का अनुमान थोड़ा घटाकर 1.5 फीसद से 3 फीसद के बीच कर दिया है. इन्फोसिस लिमिटेड एक बहुराष्ट्रीय सूचना प्रौद्योगिकी सेवा कम्पनी है, जिसका मुख्यालय बेंगलुरु, (भारत) में स्थित है। यह भारत की एक सबसे बड़ी आईटी कंपनियों में से एक है जिसके पास 30 जून 2008 को (सहायकों सहित) 94,379 से अधिक पेशेवर हैं। इसके भारत में 9 विकास केन्द्र हैं और दुनिया भर में 30 से अधिक कार्यालय हैं। वित्तीय वर्ष 2007–2008 के लिए इसका वार्षिक राजस्व 4 बिलियन से अधिक है, इसकी बाजार पूंजी 30 बिलियन से अधिक है। 24 अगस्त 2021 को, इन्फोसिस बाजार पूंजीकरण में +100 बिलियन तक पहुँचने वाली चौथी भारतीय कंपनी बन गई। इन्फोसिस की स्थापना 2 जुलाई, 1981 को पुणे में एन आर नारायण मूर्ति के द्वारा की गई। इनके साथ छह अन्य लोग थे। नंदन निलेकानी, एन. एस. राघवन, क्रिस गोपालकृष्णन, एस. डी. शिबुलाल, के. दिनेश और अशोक अरोड़ा। राघवन के साथ आधिकारिक तौर पर कंपनी के पहले कर्मचारी रहे। मूर्ति ने अपनी पत्नी सुधा मूर्ति से 10,000 आई एन आर लेकर कम्पनी की शुरुआत की। कम्पनी की शुरुआत उत्तर मध्य मुंबई में माटुंगा में राघवन के घर में इन्फोसिस कंसल्टेंट्स प्रा.लि. के रूप में हुई, जो एक पंजीकृत कार्यालय था। 2001 में इसे बिजनिस टुडे के द्वारा भारत के सर्वश्रेष्ठ नियोक्ता की श्रेणी में रखा गया। इन्फोसिस ने वर्ष 2003, 2004 और 2005, के लिए ग्लोबल मेक (सर्वाधिक प्रशंसित ज्ञान एंटरप्राइजिज) पुरस्कार जीता। यह पुरस्कार जीतने वाली यह एकमात्र कम्पनी बन गई और इसके लिए इसे ग्लोबल हॉल ऑव फेम में प्रोत्साहित किया गया। 1996 में, इन्फोसिस ने कर्नाटक राज्य में अपना एक संस्थान बनाया, जो कि स्वास्थ्य सामाजिक पुनर्वास और ग्रामीण उत्थान, शिक्षा, कला और संस्कृति के क्षेत्रों में कार्य कर रहा है। तब से, यह संस्थान भारत के तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, ओड़िशा और पंजाब राज्यों तक फैल गया है। इन्फोसिस संस्थान का नेतृत्व श्रीमती सुधा मूर्ति कर रही हैं, जो अध्यक्ष नारायण मूर्ति की पत्नी हैं। 2004 के बाद से, इन्फोसिस ने (अकैडमिक आंटांट) नामक कार्यक्रम के अंतर्गत, दुनिया–भर में अपने अकादमिक रिश्तों को मजबूत और औपचारिक बनाने की पहल की है। कम्पनी मामले का अध्ययन लेखन, शैक्षणिक सम्मेलनों और विश्वविद्यालय के कार्यक्रमों में भाग लेना, अनुसंधान में सहयोग, इन्फोसिस विकास केन्द्रों के लिए अध्ययन यात्राओं की मेजबानी करना और इन्स्टेप ग्लोबल इंटर्नशिप कार्यक्रम चलाना आदि के माध्यम से महत्वपूर्ण दावेदारों के साथ संचार करती है। इन्फोसिस का ग्लोबल इंटर्नशिप कार्यक्रम जो इनस्टेप के नाम से जाना जाता है, अकादमिक एंटिटी पहल के मुख्य अवयवों में से एक है। यह दुनिया भर में विश्वविद्यालयों से इन्टर्नज के लिए लाइव परियोजनाएँ प्रस्तुत करता है। इनस्टेप व्यापार, तकनीक और उदार कला विश्वविद्यालयों से स्नातक, अधो स्नातक और पीएचडी विद्यार्थियों की भर्ती करता है, जो किसी भी एक इन्फोसिस ग्लोबल कार्यालय में 8 से 24 सप्ताह की इंटर्नशिप में भाग लेते हैं।

`टीवी पर रोल आते हैं पर ठुकरा देती हूं', रेणुका शहाणे ने नई सीरीज अगं आई से जुड़ी बातें की साझा

मराठी वेब सीरीज अगं आई अहो आई के जरिए रेणुका शहाणे रिश्तों की एक नई सोच ऑडियंस तक पहुंचाने जा रही हैं। अमर उजाला डिजिटल से खास बातचीत में उन्होंने शादी, सास–बहू के रिश्ते, जेंडर रोल्स और टीवी पर दिखाए जाने वाले किचन पॉलिटिक्स पर अपनी बात रखी। रेणुका कहती हैं, 'यह सीरीज सिर्फ पारिवारिक मनोरंजन नहीं, बल्कि उन धारणाओं को चुनौती देती है जिन्हें समाज लंबे समय से सच मानता आया है। अक्सर कहानियों में यही दिखाया जाता है कि महिलाएं ही महिलाओं की सबसे बड़ी दुश्मन होती हैं। हमारी सीरीज उस सोच को तोड़ती है और रिश्तों की एक सकारात्मक तस्वीर पेश करती है।' आज के समय में शादी को लेकर युवाओं के मन में बढ़ रहे डर पर रेणुका शहाणे ने कहा, 'इसकी वजह रिश्तों को लेकर बना नजरिया है। अगर हमने यह तय कर दिया कि लड़के वालों को ज्यादा पावर मिलनी चाहिए, तो फिर हम एक–दूसरे को व्यक्ति के रूप में नहीं देख रहे। अगर आपकी भावना किसी को नीचा दिखाने की है, तो रिश्ते कभी पनप नहीं सकते। लेकिन अगर एक–दूसरे को समझने की इच्छा हो, तो ऐसा जरूरी नहीं कि हर बात पर सहमति हो। समझने की कोशिश होनी चाहिए। अगर ऐसा हो जाए, तो शादी से कोई क्यों डरेगा? वही तो दुनिया का सबसे खूबसूरत रिश्ता है।'

जब रेणुका से पूछा गया कि क्या ऐसी कोई बात है, जो उन्होंने खुद एक बहू के तौर पर महसूस की और जिसे वह अगली पीढ़ी तक नहीं जाने देना चाहेंगी, तो उन्होंने कहा कि आज भी बहू को पूरी तरह अपना नहीं माना जाता। उन्होंने कहा, 'हम यह कहते जरूर हैं कि बहू और बेटी में कोई अंतर नहीं करते। लेकिन अंतर तो होता ही है। कई साल गुजर जाते हैं, बच्चे बड़े हो जाते हैं, फिर भी कहीं–न–कहीं बहू को एक आउटसाइडर की तरह देखा जाता है। कई बार मुझे लगता है कि वह न पूरी तरह मायके की रह जाती है, न ससुराल की।'

टीवी पर वर्षों से दिखाए जा रहे किचन पॉलिटिक्स वाले कंटेंट पर भी रेणुका शहाणे ने खुलकर अपनी राय रखी। उन्होंने कहा, 'ऑफर्स तो बहुत मिलते हैं लेकिन मेरा पहला सवाल हमेशा यही होता है कि क्या सास किसी भी तरह से बहू को प्रताड़ित कर रही है? अगर ऐसा है, तो मैं वह रोल नहीं करती। मैं ऐसे रोल के खिलाफ नहीं हूं पर सवाल यह है कि आप दर्शकों तक क्या संदेश पहुंचा रहे हैं। आप छह साल तक एक लड़की को प्रताड़ित करते रहेंगे और आखिर में डेढ़ एपिसोड में उसका साथ दिखा देंगे, तो लोगों के दिमाग में वही छह साल रहेंगे।'

बहुओं के पहनावे को लेकर होने वाली जजमेंट से भी रेणुका सहमत नहीं हैं। वह कहती हैं, बड़ों का सम्मान करना बहुत अच्छी बात है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि आपकी अपनी कोई आवाज ही न हो। अगर कोई वेस्टर्न ड्रेस भी पहन रहा है, तब भी वह अपने माता–पिता या सास–ससुर का पूरा सम्मान कर सकता है। कपड़ों और संस्कारों का कोई संबंध नहीं है। मैं नहीं चाहूंगी कि मेरी बहू को उसके पहनावे के आधार पर जज किया जाए। दो बेटों की मां रेणुका मानती हैं कि जेंडर रोल्स की शुरुआत ससुराल से पहले अपने घर से ही हो जाती है। उन्होंने अपने बेटे का एक अनुभव साझा करते हुए कहा, मेरे छोटे बेटे ने बताया कि उसकी कई दोस्त जो लड़कियां हैं, जानबूझकर देर से घर जाती हैं, क्योंकि घर पहुंचते ही उनसे काम करवाया जाता है। यही फर्क है। लड़कों से ऐसी उम्मीदें कम होती हैं। जब अपने ही घर में यह अंतर है, तो बाहर की बात क्या करें। हिंदी और मराठी इंडस्ट्री में काम करने के अनुभव पर रेणुका कहती हैं कि मराठी सिनेमा से उनका रिश्ता बेहद निजी है। वह कहती हैं, मराठी इंडस्ट्री मेरे लिए मायके जैसी है। मायका तो आखिर मायका ही होता है। अपनी मातृभाषा मां जैसी होती है। उसमें काम करने का अनुभव बहुत सुखद होता है। यह इंडस्ट्री छोटी है, इसलिए हम एक–दूसरे को अच्छी तरह जानते हैं। सबसे अच्छी बात यह है कि यहां महिलाओं के लिए मजबूत और महिला प्रधान किरदार लगातार लिखे जा रहे हैं। मराठी दर्शक ऐसी प्रोग्रेसिव कहानियों को पसंद भी करते हैं।

> "लेकिन अंतर तो होता ही है। कई साल गुजर जाते हैं, बच्चे बड़े हो जाते हैं, फिर भी कहीं-न-कहीं बहू को एक आउटसाइडर की तरह देखा जाता है। कई बार मुझे लगता है कि वह न पूरी तरह मायके की रह जाती है, न ससुराल की।'

कभी एक दूसरे के दीवाने थे करिश्मा कपूर गोविंदा, पत्नी सुनीता को भी थी इस बात की भनक, सालों बाद शगुफ्ता ने खोले राज

गोविंदा और करिश्मा कपूर की जोड़ी 90 के दशक की सबसे हिट और पसंदीदा ऑनस्क्रीन में गिनी जाती थी। दोनों ने एक साथ कई ब्लॉकबस्टर फिल्मों में काम किया, जिनमें हीरो नंबर 1, कुली नंबर 1, राजा बाबू, अंदाज अपना अपना अपना और हसीना मान जाएगी जैसी फिल्में शामिल हैं। उनकी शानदार केमिस्ट्री को दर्शकों ने खूब पसंद किया। फिल्मों के साथ काम करते–करते दोनों के रिश्ते को लेकर भी कई तरह की चर्चाएं होने लगी थीं और उनके अफेयर की खबरें लंबे समय तक सुर्खियों में बनीं रहीं। हाल ही में अभिनेत्री शगुफ्ता अली, जो गोविंदा और करिश्मा कपूर के साथ कई फिल्मों में नजर आ रही चुकी हैं, ने दोनों के कथित रिश्ते और उनके साथ काम करना बंद करने की वजहों पर खुलकर अपनी बात रखी। इस दौरान उन्होंने करिश्मा कपूर के साथ शूटिंग के दौरन का अपना अनुभव भी साझा किया और उनके स्वभाव को लेकर भी अपनी राय व्यक्त की। हक ही में हुए एक इंटरव्यू के दौरान शगुफ्ता अली ने गोविंदा और करिश्मा कपूर की जोड़ी के टूटने और उनके साथ काम बंद करने को लेकर अपनी राय रखी। उन्होंने कहा की संभव है समय के साथ दोनों की एक–दूसरे में दिलचस्पी कम हो गई हो या रिश्ते में पहले जैसा अपनापन न रहा हो। शगुफ्ता ने यह भी कहा की फिल्म इंडस्ट्री में केवल प्रतिभा ही नहीं बल्कि व्यवहार भी बहुत मायने रखता है। उन्होंने करिश्मा कपूर को बेहद मेहनती और महत्वाकांक्षी बताया लेकिन साथ ही कहा की उनका एटीट्यूड भी काफी मजबूत था, जो कई बार साफ दिखाई देता था। शगुफ्ता के मुताबिक, किसी भी फिल्म में सह–कलाकारों के बीच अच्छा तालमेल होना बेहद जरुरी होता है। चाहे शूटिंग हो यह इंटरव्यू, दोनों कलाकारों को बराबरी से अपनी बात रखने का अवसर मिलना चाहिए क्योंकि इसका सीधा असर उनके काम और परफॉरमेंस पर पड़ता है। उन्होंने आगे कहा कि अगर एक कलाकार अपने सह–कलाकार को सीन के दौरान पूरा सहयोग देता है, तो दूसरे को भी वैसा ही सहयोग करना चाहिए। हालांकि उन्होंने यह भी जोड़ा कि अगर सामने वाला सहयोग न भी करे, तब भी वह अपने अनुभव के दम पर सीन निभा सकती हैं। शफगुफ्ता अली ने कहा कि शायद यही वजह है वह पिछले चार दशकों से फिल्म इंडस्ट्री में लगातार काम कर रही हैं। शगुफ्ता अली ने यह भी कहा कि गोविंदा और करिश्मा कपूर के कथित रिश्ते की जानकारी सुनीता आहूजा को भी थी। उनके अनुसार, सुनीता ने इस मुद्दे को कभी सार्वजानिक विवाद नहीं बनने दिया और पूरे मामले को समझदारी व शांत तरीके से संभाला। शगुफ्ता ने यह भी उल्लेख किया कि हाल ही में लॉक अप 2 में सुनीता आहूजा ने गोविंदा के कथित अफेयर से जुड़े कुछ किस्सों का जिक्र किया था। इससे पहले भी वह कई मौकों पर इस विषय पर अपनी प्रतिक्रिया दे चुकी हैं।

दिल्ली हाई कोर्ट का बड़ा फैसला, फिल्म `काला हिरण' के लिंक हटाने का दिया आदेश, मेकर्स को लगाई फटकार

दिल्ली हाई कोर्ट ने सोमवार को 'काला हिरणरू द बैटल फॉर लेगेसी' फिल्म से जुड़े एक्स और यूट्यूब लिंक हटाने का आदेश दिया। यह फैसला सलमान खान की याचिका पर सुनवाई के दौरान आया। कोर्ट ने फिल्म के प्रोड्यूसर अमित जानी के रवैये पर भी नाराजगी जताई। सुनवाई के दौरान कोर्ट ने सख्त टिप्पणी करते हुए कहा, 'पिछली बार कोई आदेश नहीं आया, इसलिए आपकी हिम्मत बढ़ गई है। ऐसा लगता है आप खुद को कानून से ऊपर समझते हैं। आपका व्यवहार दिन–ब–दिन खराब होता जा रहा है।' अमित जानी के वकील ने कहा कि यह सिर्फ एक टीजर है और इसमें सलमान खान का नाम तक नहीं लिया गया। उन्होंने यह भी कहा कि इसमें कोई एआई या डीपफेक का इस्तेमाल नहीं हुआ है, और किसी घटना या सार्वजनिक जानकारी पर किसी का अधिकार नहीं होता। सलमान खान की तरफ से वकील ने कहा कि काला हिरण केस से जुड़े 4 मामलों में से 3 में उन्हें बरी किया जा चुका है, जबकि एक मामले में सजा पर रोक लगी हुई है। साथ ही आरोप लगाया गया कि फिल्म के जरिए एक समुदाय को उनके खिलाफ भड़काने की कोशिश हो रही है। यह विवाद तब शुरू हुआ जब सलमान खान ने दिल्ली हाई कोर्ट में याचिका दाखिल कर 'काला हिरण– द बैटल फॉर लेगेसी' फिल्म पर रोक लगाने की मांग की। उनका कहना है कि फिल्म उनकी काला हिरण शिकार केस से प्रेरित है और इससे उनकी छवि को नुकसान पहुंच सकता है। 2 जून को भेजे गए लीगल नोटिस के जवाब में अमित जानी ने आरोपों को खारिज करते हुए कहा कि फिल्म पब्लिक डोमेन में मौजूद जानकारी पर आधारित है और इसमें बिश्नोई समुदाय द्वारा वन्यजीवों की रक्षा की कहानी दिखाई गई है। फिलहाल कोर्ट के इस आदेश के बाद फिल्म को लेकर विवाद और बढ़ता नजर आ रहा है। अब देखना होगा कि आगे इस केस में क्या फैसला आता है।

सीजेपी पर भड़की श्वेता तिवारी, पूछे सवाल– पंजाब के शिक्षा मंत्री के खिलाफ कब करोगे प्रदर्शन?

नीट परीक्षा पेपर लीक मामले को लेकर छात्र लंबे समय से केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान की मांग को लेकर प्रदर्शन कर रहे थे। शनिवार को धर्मेंद्र प्रधान ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया। उनके इस्तीफे के बाद टीवी अभिनेत्री श्वेता तिवारी ने सोशल मीडिया पर अपनी प्रतिक्रिया साझा की उन्होंने इंस्टाग्राम स्टोरी के जरिए कॉकरोच जनता पार्टी के संस्थापक अभिजीत दिपके से सवाल करते हुए पंजाब के शिक्षा मंत्री के मुद्दे पर भी जवाब मांगा। श्वेता तिवारी ने कॉकरोच जनता पार्टी के संस्थापक अभिजीत दिपके से सीधा सवाल किया कि पंजाब के शिक्षा मंत्री का इस्तीफा आखिर कब होगा। उन्होंने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर अभिजीत दिपके का एक वीडियो साझा किया। इस वीडियो में दिपके लोगों लोगों को संबोधित करते हुए कहते नजर आ रहे हैं कि धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफा देने के बाद अब वे कैबिनेट के उन सभी मंत्रियों से भी इस्तीफे की मांग कर सकते हैं, जो उनके अनुसार अपना काम सही ढंग से नहीं कर रहे हैं। श्वेता तिवारी ने सोशल मीडिया पर स्टोरी डालते हुए लिखा कि अब, पंजाब के शिक्षा मंत्री कब इस्तीफा दे रहे हैं और आप लोग वहां कब विरोध–प्रदर्शन कर रहे हैं कॉकरोच जनता पार्टीश ? पंजाब में हुए पेपर लीक की वजह से अब कुछ लोग और राजनीतिक दल पंजाब के शिक्षा मंत्री हरजोत सिंह बैंस के इस्तीफे की मांग कर रहे हैं। राष्ट्रिय राजधानी दिल्ली के जंतर–मंतर पर छात्रों का प्रदर्शन कई दिनों तक जारी रहा, जहां वे विशेष रूप से नीट–यूजी पेपर लीक और अन्य परीक्षा अनियमितताओं को लेकर केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग कर रहे थे। शनिवार को उनके पद छोड़ने के बाद कई फिल्म और टीवी सितारों ने सोशल मीडिया पर प्रतिक्रिया दी। कई सेलेब्स ने इसे छात्रों के संघर्ष और एकजुटता की जीत करार दिया।

'मेरा हौसला और ताकत' सनी देओल ने साझा की मां के साथ तस्वीर, बताया कब रिलीज होगा 'बंटवारा 1947' का ट्रेलर?

आमिर खान प्रोडक्शंस की फिल्म 'बंटवारा 1947' में सनी देओल लीड रोल में हैं। इस फिल्म को राजकुमार संतोषी निर्देशित कर रहे हैं। यह फिल्म 14 अगस्त 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज हो सकती है। फिल्म का ट्रेलर कब आएगा, इस बारे में अभिनेता सनी देओल ने एक सोशल मीडिया पोस्ट साझा की है। अभिनेता सनी देओल ने इंस्टाग्राम पर मां के साथ एक तस्वीर साझा की। जिसमें वह लिखते हैं, 'मेरी मां ही मेरा रब है। मेरा प्यार, मेरा हौसला और मेरी ताकत हैं। फिल्म 'बंटवारा 1947' मैं अपनी मां और दुनिया की हर मां को समर्पित करता हूं।' आगे सनी देओल ने लिखा, 'फिल्म का ट्रेलर कल रिलीज होगा।' सनी देओल ने फिल्म को मिले ए सर्टिफिकेट पर खुशी जाहिर करते हुए पोस्ट शेयर कर लिखा है, 'हमें बेहद खुशी है कि सेंसर बोर्ड ने 'बंटवारा 1947' को बिना एक भी कट लगाए 'ए' सर्टिफिकेट दिया है। इंसानियत और प्यार की कहानी कहने वाली इस फिल्म को इस पार्टिशन डे यानी 14 अगस्त से सिनेमाघरों में जरूर देखें।' 'बंटवारा 1947' एक भावुक करने वाली कहानी है। यह भारत के बंटवारे के दर्द और उससे जुड़े इंसानी जज्बातों को करीब से दिखाएगी। फिल्म मुश्किल हालात में भी प्यार, हिम्मत, त्याग और कभी हार न मानने वाले जज्बे की कहानी कहेगी। फिल्म में शबाना आजमी, सनी देओल, प्रीति जी जिंटा, करण देओल, अली फजल और अभिमन्यु सिंह जैसे कलाकार नजर आएंगे। खास बात यह है कि करीब 30 साल बाद राजकुमार संतोषी और सनी देओल की जोड़ी फिर से साथ आ रही है।

बच्चों को टिफिन में देना है कुछ हेल्दी तो फटाफट बना लें बीटरूट आलू कटलेट

बीटरूट यानी चुकंदर ऐसी चीज है जिसका सेवन सेहत के हिसाब से बहुत लाभकारी माना जाता है। चुकंदर से शरीर का खून भी बढ़ता है और कई सारे रोग भी दूर होते हैं। इतना लाभकारी होने के बाद भी कई सारे बच्चे इसे खाना पसंद नहीं करते हैं तो आप एक चुकंदर को कटलेट में रूप में बनाकर बच्चों

को सर्व कर सकती हैं। आइए आपको बताते हैं इसे बनाने का आसान तरीका...

चुकंदर आलू कटलेट बनाने की सामग्री

चुकंदर– 2

आलू– 2

चाट मसाला– 1/2 चम्मच

तेल– तलने के लिए

नमक स्वादानुसार

जीरा पाउडर– 1 चम्मच

लाल मिर्च पाउडर– 1/2 चम्मच

चुकंदर आलू कटलेट बनाने की विधि

1. सबसे पहले आलू और चुकंदर को उबाल लें ।

2. इसके बाद इनके छिलकों को उतारें।

3. इसके बाद चुकंदर और आलू को कद्दूकस कर एक साथ मैश कर लें।

4. इसमें चाट मसाला, नमक, जीरा पाउडर और लाल मिर्च पाउडर मिक्स करें।

5. इसके बाद सभी को अच्छी तरह से मिलाकर कटलेट का शेप दें।

6. फिर एक पैन में तेल डालकर गर्म करें और कटलेट को गोल्डन ब्राउन होने तक फ्राई करें।

7. गरमा– गरम चटनी के साथ सर्व करें।

चाय का स्वाद बढ़ा देंगे करेले के क्रिस्पी पकौड़े, बेहद टेस्टी है ये चटपटी रेसिपी

आपने शाम की चाय के साथ आलू, पनीर और प्याज जैसी कई चीजों के पकौड़े बनाकर खाएं होंगे, लेकिन क्या आपने कभी करेले के पकौड़े बनाकर खाएं हैं? सुनकर हो सकता है कई लोगों को करेले का कड़वा स्वाद महसूस भी होने लगे। लेकिन यकीन मानिए करेले के पकौड़ों का स्वाद चाय के साथ कड़वा नहीं बल्कि

बेहद कमाल लगता है। इस रेसिपी का स्वाद एक बार चखने के बाद आप इसे बार–बार अपनी किचन में ट्राई करना पसंद करेंगे।

करेले के पकौड़े बनाने के लिए सामग्री–

– 6 करेले

– 1 कप बेसन

– आधा कप चावल का आटा

– 4 कटी हुई हरी मिर्च

– 1 चुटकी हींग

– तलने के लिए सरसों का तेल

– स्वादानुसार नमक

– आधा छोटा चम्मच हल्दी पाउडर

– आधा छोटा चम्मच गरम मसाला

करेले के पकौड़े बनाने का तरीका–

करेले के पकौड़े बनाने के लिए सबसे पहले करेले के छिलके उतारकर उन्हें गोल शेप में काट लें। इसके बाद एक बर्तन में बेसन, चावल का आटा और बाकी मसाले डालकर उसका घोल तैयार कर लें। अब कड़ाही में तेल गर्म करके कटे हुए करेले बेसन के घोल में डीप करके तेल में फ्राई कर लें। इन करेलों को क्रिस्पी होने तक फ्राई करें। इसके बाद फ्राइड करेलों के ऊपर चाट मसाला छिड़ककर उन्हें चाय के साथ सर्व करें।

भीड़भाड़ से दूर इन ऑफबीट जगहों पर बिताएं छुट्टियां, वापस लौटने का नहीं होगा मन

गर्मियों की छुट्टियां शुरू होते ही लोग घूमने निकल जाते हैं। गर्मी अधिक होने की वजह से लोग हिल स्टेशनों का रुख करते हैं। इस मौसम में भी हिल स्टेशनों पर तापमान कुछ कम होने से ठंडक महसूस होती है। गर्मियों की छुट्टियों में पहाड़ी जगहों पर जाने से हिल स्टेशनों पर बहुत ज्यादा भीड़ देखने को मिलती है। वहीं हिल स्टेशनों में पर्यटकों की भीड़ के चलते वहां पर चीजों के दाम दोगुने हो जाते हैं। होटल के रूम से लेकर खाने–पीने का सामना तक महंगा हो जाता है।

ऐसे में अगर आप भी कम बजट में हिल स्टेशन घूमने के लिए जाना चाहते हैं। तो यह आर्टिकल आपके लिए है। इस आर्टिकल के जरिए हम आपको कुछ ऐसी जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं, जहां पर भीड़ कम होने के साथ ही आप अपने बनाए बजट में सुकून भरी छुट्टियां बिता सकते हैं। आज हम आपको नॉर्थ इंडिया के कुछ कम भीड़भाड़ वाले हिल स्टेशनों के बारे में बताने जा रहे हैं। जहां पर जाकर आप आराम से अपनी छुट्टियों को इंज्वॉय कर सकते हैं। आइए जानते हैं नॉर्थ इंडिया के कुछ बेहतरीन हिल स्टेशनों के बारे में...

नारकंडा, हिमाचल प्रदेश

हिल स्टेशन की बात करें तो सबसे पहले नाम शिमला–मनाली का आता है। लेकिन शिमला में पर्यटकों की बहुत भीड़ रहती है। ऐसे में अगर आप कम भीड़भाड़ वाली जगह पर जाना चाहते हैं तो आप शिमला से 60 किमी की दूरी तय कर छोटे से शहर नारकंडा जा सकते हैं। बता दें कि नारकंडा एक स्की रिसॉर्ट है। यहां पर बर्फ से ढकी चोटियों की खूबसूरती निहारने में एक अलग ही एहसास की अनुभूति होगी। छुट्टियां बिताने के लिए यह एक सुकून भरी जगह है।

कल्प, हिमाचल प्रदेश

हिमाचल प्रदेश के कन्नौर हिल स्टेशन पर लोग अपनी छुट्टियों को मनाने के लिए जाते हैं। लेकिन अगर आप भीड़भाड़ से दूर छुट्टियां बिताना चाहते हैं, तो इसके लिए कल्प जा सकते हैं। किन्नौर के छोटा सा शहर, जिसे कल्प नाम के जानते हैं। यह सतलुज नदी घाटी में स्थित है। शिमला काजा हाईवे से कल्प शहर 16 किमी दूर है। यहां पर आपको देवदार के बड़े–बड़े वृक्षों के साथ ही बर्फीली वादियां देखने को मिलेंगी।

रिवालसर

रिवालसर हिल स्टेशन हिमाचल प्रदेश के ऑफबीट हिल स्टेशनों में से एक है। हालांकि धार्मिक दृष्टि से रिवालसर अहम माना जाता है। यह जगह हिंदुओं, बौद्धों और सिखों की आस्था का केंद्र है। भीड़भाड़ कम होने के कारण यह सस्ती और सुकून भरी जगह है।

चौकोरी, उत्तराखंड

उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले में चौकोरी नामक छोटा सा हिल स्टेशन है। इस हिल स्टेशन की सुंदरता देख आपका वापस आने का मन नहीं करेगा। चौकोरी हिल स्टेशन के बारे में बहुत कम पर्यटकों को पता है। यहां की प्राकृतिक सुंदरता आपको अपनी ओर खींचने का काम करती है।

मुख्य द्वार पर लगाएं इस पवित्र पौधे की जड़, घर में नहीं रहेगी पैसे की कमी

हिंदू धर्म में वास्तु शास्त्र का बहुत ही महत्व बताया गया है। इस शास्त्र की मानें तो घर में कुछ पौधे लगाना बहुत ही शुभ माने जाते हैं। उन्हीं पौधो में से एक है तुलसी का पौधा। तुलसी के पौधो को हिंदू धर्म शास्त् रमें भी बहुत ही माननीय माना जाता है। मान्यताओं के अनुसार, रोजाना तुलसी के पौधे की पूजा करने से मां लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं। पौधे के अलावा तुलसी की जड़ भी बहुत ही लाभकारी मानी जाती है। मुख्य द्वार पर तुलसी की पौधे की जड़ लगाने से कई तरह की परेशानियां भी दूर होती हैं। तो चलिए आपको बताते हैं इससे जुड़ी कुछ वास्तु टिप्स...

वास्तु दोष होगा दूर

मान्यताओं के अनुसार, तुलसी की जड़ मुख्य द्वार में लटकाने से घर का वास्तु दोष दूर होता है। इसके अलावा घर की

नेगेटिविटी भी दूर होती है और परिवार के सदस्यों में खुशियां बढ़ती हैं।

घर में आती है पॉजिटिव एनर्जी

इसे मुख्य द्वार पर लटाकने से घर में पॉजिटिव एनर्जी आती है और मां लक्ष्मी प्रसन्न होती है। इसके अलावा धन का लाभ भी होगा और घर में सुख–समृद्धि का आगमन होगा।

नहीं होगी धन की कमी

घर में इसका पौधा लगाने से कभी भी पैसे की कमी नहीं होती। इसके अलावा व्यक्ति के ऊपर मां लक्ष्मी भी कृपा बरसाती हैं।

ऐसे बांधे पौधे की जड़

मुख्य द्वार पर पौधे की जड़ टांगने से पहले इसको गंगाजल के साथ साफ कर लें। इसके बाद लाल कपड़ा और थोड़े से चावल एक कपड़े की पोठली में बांधे। इसके बाद कलावे के साथ पोटली भी मुख्य द्वार पर बांध लें।

इस बात का ध्यान रखें

तुलसी का पड़ हमेशा पौधे से इस तरह निकालें की यह बिल्कुल भी न सूखे। सूखी हुई तुलसी घर में लगाना अशुभ मानी जाती है।

डिलीवरी के बाद न्यू मॉम ना करें अपनी हेल्थ को नजरअंदाज, इन टिप्स से रखें खुद का ख्याल

डिलीवरी के बाद नई मां की जिंदगी में कई तरीकों से बदल जाती है। उनके साथ अब एक नन्हां मेहमान भी होता है, जिसका ख्याल रखने के चक्कर, जैसे की बच्चे को हर आधे घंटे पर फीड कराना , उसके गिल कपड़े बदलना, उसे साफ सुथरा रखना, बच्चे को सुलाना, नहाना आदि जिम्मेदारियों में नई मॉम्स खुद की हेल्थ को पूरी तरह से नजरअंदज कर देती है। ऐसी गलती बिल्कुल ना करें। अगर आप हेल्दी रहेंगी तो ही अपने बच्चे का ख्याल रख पाएंगे। वरना शारीरिक और मानासिक पीड़ा के चलते चवेज–कमचतमेपवद से भी जूजना पड़ सकता है। आइए आज आपको कुछ टिप्स देते हैं जिससे आप खुद का ख्याल रख सकती हैं....

हेल्दी डाइट पर दें ध्यान

बच्चे के जन्म से पहले और बाद में मां के शरीर में कई तरह के बदलाव आते हैं। ऐसे में बच्चे को आपको भरपूर दूध पीलाने के खुद की डाइट में प्रोटीन और कैल्शियम वाली चीजों को शामिल करना चाहिए। साथ में डॉक्टर की सप्लीमेंट्स को भी समय पर लेते रहें, वरना शरीर में कमजोरी महसूस हो सकती है।

बेबी ब्लूज से करें खुद को बाहर

बच्चे के जन्म के बाद एक मां में कई तरह के हॉर्मोनल, शारीरिक और मनोवैज्ञानिक तौर पर बदलाव आते हैं। यही कारण है कि नई मां मेंटली तौर पर खुद को काफी कमजोर महसूस करती है और कई बार नई मॉम्स चिड़चिड़ी हो जाती है। ऐसे में परिवार के साथ ज्यादा समय बिताएं औप पति को भी मन भी बात बताएं। इससे मन हल्का होगा और आप बेहतर महसूस करेंगी।

नींद करें पूरी

डिलीवरी के बाद मां की बॉडी हिल कर रही होती है। जल्दी हील होने के लिए जरुरी है कि मां ज्यादा से ज्यादा नींद लें । ऐसा करने से मिल्क सप्लाई में भी फायदे मिलेगा और स्ट्रेस भी कम होगा।

मसाज

अगर आपकी नॉर्मल डिलीवरी हुई है तो हफ्ते भर किसी एक्सपेरियंस पर्सन से मसाज करवा सकते हैं। वहीं अगर आपकी सी सेक्शन हुई है तो बच्चे के जन्म के 21 दिन बाद मसाज करवा सकते हैं। शरीर को बहुत आराम मिलेगा।

संक्षिप्त

पोडियम पर खूब रोई मीराबाई, बताया- क्यों हुई भावुक? मुथुपांडी बोले- रजत पदक माता-पिता और कोच के नाम

ग्लास्गो,एजेंसी। ग्लास्गो राष्ट्रमंडल खेल 2026 में भारत के लिए चौथा दिन यादगार रहा। एक ओर मीराबाई चानू ने राष्ट्रमंडल खेलों में लगातार तीसरी बार स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रच दिया, तो दूसरी ओर पोडियम पर उनकी आंखों से आंसू छलक पड़े। मीराबाई ने बताया कि यह खुशी वर्षों के त्याग, चोटों और मानसिक संघर्ष का परिणाम थी। वहीं पुरुषों के 65 किग्रा वर्ग में रजत पदक जीतने वाले राजा मुथुपांडी ने स्वर्ण से चूकने का अफसोस जताया और अपनी सफलता माता-पिता तथा कोच विजय शर्मा को समर्पित करते हुए भावुक बयान दिया। दोनों भारतीय भारोत्तोलकों के ये शब्द उनके संघर्ष और मेहनत की कहानी खुद बयां करते हैं। महिलाओं के 48 किग्रा वर्ग में स्वर्ण जीतने के बाद मीराबाई चानू काफी भावुक नजर आईं। उन्होंने कहा कि इस उपलब्धि के पीछे कई वर्षों की मेहनत, चोटों से जंग और मानसिक दबाव रहा है। मीराबाई ने कहा, श्मैं बहुत खुश हूं और बहुत भावुक भी हूं। यहां तक पहुंचने और पदक जीतने के लिए मैंने बहुत त्याग किए हैं। मैंने मानसिक तनाव और चोटों का सामना किया। मुझे नहीं पता था कि मैं राष्ट्रमंडल खेलों का रिकॉर्ड बना दूंगी। मेरा पूरा ध्यान सिर्फ अपने कोच द्वारा दिए गए वजन को सफलतापूर्वक उठाने पर था। मीराबाई ने महिलाओं के 48 किग्रा वर्ग में कुल 190 किग्रा (85 किग्रा स्नैच और 105 किग्रा क्लीन एंड जर्क) वजन उठाकर न केवल स्वर्ण पदक जीता, बल्कि नया राष्ट्रमंडल खेल और राष्ट्रमंडल रिकॉर्ड भी अपने नाम किया। इसके साथ ही वह गोल्ड कोस्ट 2018 और बर्मिंघम 2022 के बाद लगातार तीसरी बार राष्ट्रमंडल खेलों की चैंपियन बनीं। पुरुषों के 65 किग्रा वर्ग में रजत पदक जीतने वाले राजा मुथुपांडी अपनी उपलब्धि से खुश जरूर थे, लेकिन उनके चेहरे पर स्वर्ण नहीं जीत पाने की कसक भी साफ दिखाई दी। उन्होंने कहा कि उनके कोच विजय शर्मा को उन पर स्वर्ण जीतने का भरोसा था और वह उस उम्मीद पर पूरी तरह खरे नहीं उतर सके। मुथुपांडी ने कहा, मुझे निश्चित रूप से निराशा है, क्योंकि मेरे कोच को मुझ पर भरोसा था कि हम पूरा प्रयास करके स्वर्ण पदक जीतेंगे। लेकिन मैं वैसा प्रदर्शन नहीं कर पाया। मैं यह पदक अपने माता-पिता और अपने कोच विजय शर्मा को समर्पित करता हूं। यहां से जो सीख मिली है, उसे लेकर आगे बढ़ूंगा। मैं अपने कोच के निर्देशों के अनुसार प्रशिक्षण करूंगा और पहले से भी ज्यादा मेहनत करूंगा। 26 वर्षीय मुथुपांडी ने स्नैच में 126 किग्रा और क्लीन एंड जर्क में 160 किग्रा वजन उठाकर कुल 286 किग्रा के साथ रजत पदक अपने नाम किया। स्वर्ण पदक मलेशिया के अजनिल बिन बिदिन मोहम्मद ने 299 किग्रा के राष्ट्रमंडल खेल रिकॉर्ड के साथ जीता। ग्लास्गो में भारोत्तोलन में अब तक भारत की चुनौती शानदार रही है। मीराबाई चानू ने देश को पहला स्वर्ण दिलाया, जबकि चनामबाम ऋषिकांत सिंह और राजा मुथुपांडी ने रजत पदक जीतकर भारत की पदक संख्या बढ़ाई। भारत ने अब तक ग्लास्गो में चार पदक जीत लिए हैं।

सेंसेक्स 776 अंक उछला, निफ्टी 24000 के करीब पहुंचा

नई दिल्ली,एजेंसी। भारतीय शेयर बाजार में सोमवार को निवेशकों के चेहरे पर खुशी लौट आई। प्रमुख सूचकांकों सेंसेक्स और निफ्टी ने जबरदस्त उछाल दर्ज की। कारोबार के अंत में दोनों सूचकांकों ने महत्वपूर्ण बढ़त के साथ अपनी यात्रा समाप्त की। यह तेजी बाजार में सकारात्मक माहौल का संकेत देती है। मुंबई शेयर बाजार का संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 776.01 अंक की शानदार वृद्धि के साथ 76,835.78 के स्तर पर बंद हुआ। यह एक दिन में 1.02 फीसदी की बढ़ोतरी दर्शाता है। इसी तरह, नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी 228.50 अंक चढ़कर 23,995.95 पर पहुंच गया। निफ्टी में 0.96 फीसदी की बढ़ोतरी दर्ज की गई। दूसरी ओर, रुपया डॉलर के मुकाबले 63 पैसे बढ़कर 95.90 (अस्थायी) पर बंद हुआ। निवेशकों ने विभिन्न क्षेत्रों में जमकर खरीदारी की। बाजार विशेषज्ञों के अनुसार, वैश्विक संकेतों और घरेलू आर्थिक आंकड़ों ने इस तेजी को बढ़ावा दिया। कई कंपनियों के शेयरों में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई। बाजार में यह बड़ी वृद्धि कई कारकों के कारण हुई। वैश्विक बाजारों से मिले सकारात्मक संकेत एक प्रमुख कारण रहे। विदेशी संस्थागत निवेशकों की खरीदारी ने भी बाजार को सहारा दिया। घरेलू निवेशकों ने भी उत्साहपूर्वक निवेश किया। कंपनियों के तिमाही नतीजों को लेकर सकारात्मक उम्मीदें भी बाजार में दिखीं। इसके अलावा, कुछ प्रमुख क्षेत्रों में मजबूत प्रदर्शन ने भी सूचकांकों को ऊपर धकेला। इस तेजी से निवेशकों का भरोसा बढ़ा है। जिन निवेशकों ने हाल ही में निवेश किया था, उन्हें अच्छा लाभ मिला होगा। यह बाजार में नई पूंजी आने का संकेत भी हो सकता है। हालांकि, विशेषज्ञों का मानना है कि निवेशकों को सावधानी बरतनी चाहिए। बाजार की अस्थिरता को देखते हुए सोच-समझकर निर्णय लेना महत्वपूर्ण है। दीर्घकालिक निवेश के लिए यह एक अच्छा अवसर हो सकता है। बाजार विशेषज्ञों के अनुसार, आने वाले दिनों में भी तेजी का यह रुझान जारी रह सकता है। हालांकि, वैश्विक आर्थिक परिस्थितियों पर भी नजर रखनी होगी। मुद्रास्फीति और ब्याज दरों से जुड़े आंकड़े बाजार की दिशा तय करेंगे। सरकार की नई नीतियों और घोषणाओं का भी असर दिखेगा। निवेशकों को सलाह दी जाती है कि वे बाजार के उतार-चढ़ाव पर ध्यान दें। आगामी तिमाही के नतीजे भी बाजार को प्रभावित कर सकते हैं।

टीम इंडिया की गंभीर समस्या: जीत के बाद श्रेयस ने लक्ष्मण को लेकर ऐसा क्या कहा? फैंस ने गौतम पर साधा निशाना

हरारे,एजेंसी। आयरलैंड और इंग्लैंड में टी20 सीरीज गंवाने के बाद श्रेयस अय्यर ने आखिरकार जीत का स्वाद चखा और जिम्बाब्वे का 3-0 से सूपड़ा साफ किया। इस जीत के बाद ड्रेसिंग रूम का एक वीडियो चर्चा का विषय बन गया, जिसमें अंतरिम मुख्य कोच वीवीएस लक्ष्मण और कप्तान श्रेयस अय्यर एक-दूसरे की जमकर तारीफ करते नजर आए। श्रेयस ने टीम को संभालने और युवा खिलाड़ियों का आत्मविश्वास बढ़ाने का श्रेय लक्ष्मण को दिया। हालांकि, उनके इस बयान के बाद सोशल मीडिया पर कई फैंस ने स्थायी मुख्य कोच गौतम गंभीर की कार्यशैली की तुलना शुरू कर दी और उन्हें लेकर तीखी प्रतिक्रियाएं भी सामने आने लगीं।

दरअसल, भारत के नए टी20 कप्तान श्रेयस अय्यर और अंतरिम मुख्य कोच वीवीएस लक्ष्मण ने जिम्बाब्वे के खिलाफ 3-0 से मिली जीत में एक-दूसरे की भूमिका की सराहना की। भारत ने इस सीरीज में अपेक्षाकृत नई टीम उतारी थी जिसमें संजू सैमसन, अक्षर पटेल, अर्शदीप सिंह और हर्षित राणा जैसे कई खिलाड़ी शामिल नहीं थे। भारत ने रविवार को तीसरे और अंतिम टी20 मैच में 35 रन की जीत के साथ सीरीज में क्लीन स्वीप किया। भारत ने पहला मैच सात विकेट से और दूसरा टी20 90 रन से जीता था। तीसरे टी20 में जीत के बाद भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने ड्रेसिंग रूम का एक वीडियो साझा किया, जिसमें लक्ष्मण ने अय्यर की मजबूत मानसिकता की सराहना की है। लक्ष्मण ने इस महीने की शुरुआत में इंग्लैंड के खिलाफ 0-4 की हार का जिक्र करते हुए कहा, श्मैं श्रेयस को विशेष रूप से बधाई देना चाहता हूं क्योंकि उनके कप्तानी करियर की शुरुआत थोड़ी मुश्किल रही, लेकिन जिस तरह से उन्होंने वापसी की, वह शानदार था। वह पहले मैच से एक दिन पहले जब हमसे जुड़े और तभी से जीत के लिए आश्वस्त थे। उन्होंने कहा, श्इस

टीम में कई नए खिलाड़ी शामिल थे। हम जानते हैं कि इंग्लैंड में खेलने वाले खिलाड़ियों में से केवल चार या पांच ही इस दौरे पर हमारे साथ शामिल थे, लेकिन वह आत्मविश्वास से भरे हुए थे। जिस तरह से कप्तान ने आप सभी को प्रेरित किया उसे देखते हुए इस जीत का बहुत सारा श्रेय कप्तान को जाता है।

इसके बाद अय्यर ने लक्ष्मण का आभार व्यक्त किया जिन्हें मुख्य कोच गौतम गंभीर को विश्राम दिए जाने के बाद इस दौरे के लिए अंतरिम कोच नियुक्त किया गया था। अय्यर ने कहा, इस सीरीज में कुछ कैच छोड़ने के अलावा हमारा प्रदर्शन बेदाग रहा। सहयोगी स्टाफ सहित टीम के हर सदस्य ने अपना योगदान दिया। उन्होंने कहा, हमें प्रेरित करने और हमारा हौसला बढ़ाने के लिए वीवीएस सर आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। हर दिन जब हम मैदान पर कदम रखते थे, तो मुझे लगता था कि आपने जो कुछ भी कहा वह बिल्कुल सही था और हम उससे जुड़ाव महसूस कर सकते थे। इसलिए आपका बहुत-बहुत आभार। श्रेयस के इस बयान के बाद सोशल मीडिया पर प्रतिक्रियाओं की बाढ़ आ गई। फैंस ने इसे गंभीर से जोड़ते हुए कहा कि आयरलैंड और इंग्लैंड में गंभीर के कोच रहते भारतीय टीम टी20 सीरीज में एक भी मैच नहीं जीत पाई थी। आयरलैंड ने भारत को 2-0 से और इंग्लैंड ने पांच मैचों की सीरीज में 4-0 से हराया था। इसके बाद गंभीर समेत नए कप्तान श्रेयस की जमकर आलोचना हुई थी। भारतीय टीम फिर वनडे सीरीज भी 2-1 से गंवा बैठी थी।

उसे वापस नहीं आने देगा..., किसने वैभव का नाम लेकर सैमसन को दी चेतावनी ?

हरारे,एजेंसी। आयरलैंड और इंग्लैंड के खिलाफ टी20 सीरीज में शिकस्त झेलने के बाद आखिरकार टीम इंडिया वापसी करने में कामयाब रही। जिम्बाब्वे को 3-0 से हराकर भारत ने टी20 रैंकिंग में फिर से नंबर-एक रैंकिंग भी हासिल कर ली है। भारत के लिए इस सीरीज में वैभव सूर्यवंशी सुपरस्टार बनकर निकले। उन्होंने तीन पारियों में दो अर्धशतक की बदौलत, साथ ही 50.33 की औसत और 196.10 के स्ट्राइक रेट से 151 रन बनाए और प्लेयर ऑफ द सीरीज अवॉर्ड भी हासिल किया। सीरीज खत्म होने के बाद भारत के पूर्व ऑलराउंडर इरफान पठान ने वैभव का नाम लेकर संजू सैमसन समेत तमाम भारतीय खिलाड़ियों को चेतावनी दी है। तीसरे टी20 में वैभव ने 49 गेंद में आठ चौके और चार छक्के की मदद से 81 रन की पारी खेली। इस पारी के बाद पठान ने एक्स पर अपने पोस्ट में लिखा कि वैभव ने भारतीय टी20 टीम में अपनी जगह लगभग पक्की कर ली है और यह बल्लेबाज जिस भी खिलाड़ी को रिप्लेस करेगा, उसकी टीम इंडिया में वापसी नहीं हो पाएगी। इरफान पठान ने लिखा, जिसकी भी जगह लेगा ये बच्चा, उसे वापस नहीं आने देगा। वैभव सूर्यवंशी आखिर कितने खास हैं? इससे पहले गौतम गंभीर की गैरमौजूदगी में भारतीय टीम की कोचिंग की जिम्मेदारी संभाल रहे वीवीएस लक्ष्मण ने भी वैभव की तारीफ की थी। उन्होंने मैच के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, सबसे प्रभावित करने वाली बात यह है कि एक खिलाड़ी और इंसान के तौर पर वैभव जिस तरह विकसित हुए हैं। पिछले छह महीनों में उनकी परिपक्वता, खेल की समझ और

जागरूकता में जबरदस्त वृद्धि हुई है। यही वजह है कि वह कठिन परिस्थितियों का भी शानदार तरीके से सामना कर पा रहे हैं। उन्होंने कहा, वैभव ने अंडर-19 विश्व कप खेला और चार-पांच महीने के भीतर आईपीएल में अपना दबदबा कायम कर लिया। हम जानते हैं कि आईपीएल का स्तर कितना कठिन होता है। भारत ही नहीं, दुनिया के सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजों के खिलाफ जिस तरह उन्होंने खुद को निखारा और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेटर के रूप में आगे बढ़े, उससे उनकी प्रतिभा और क्षमता का पता चलता है।

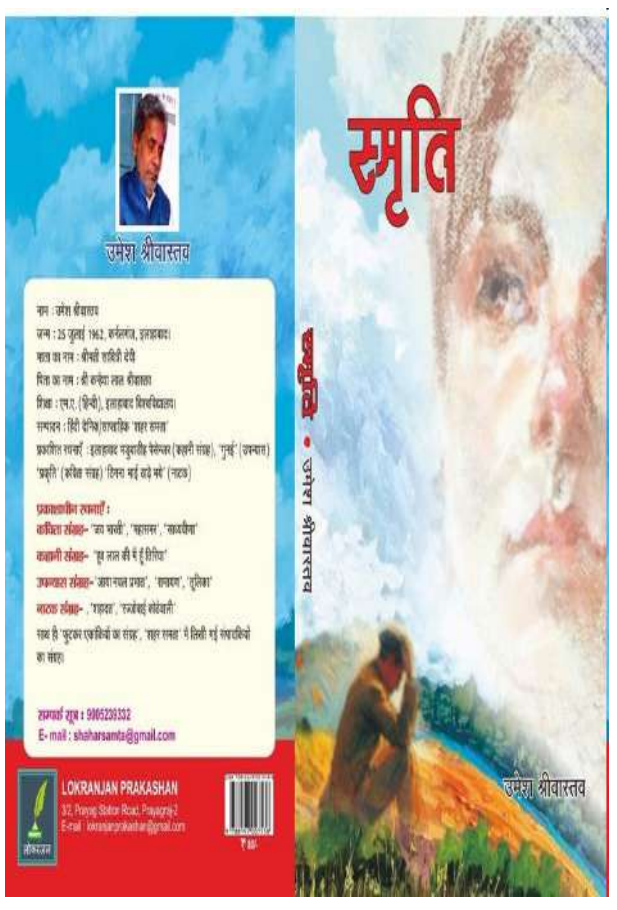

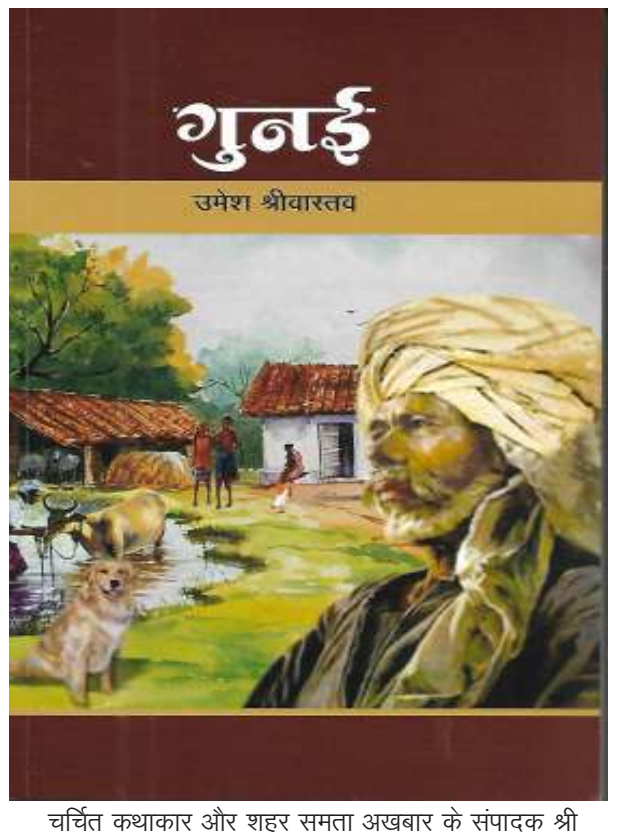

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

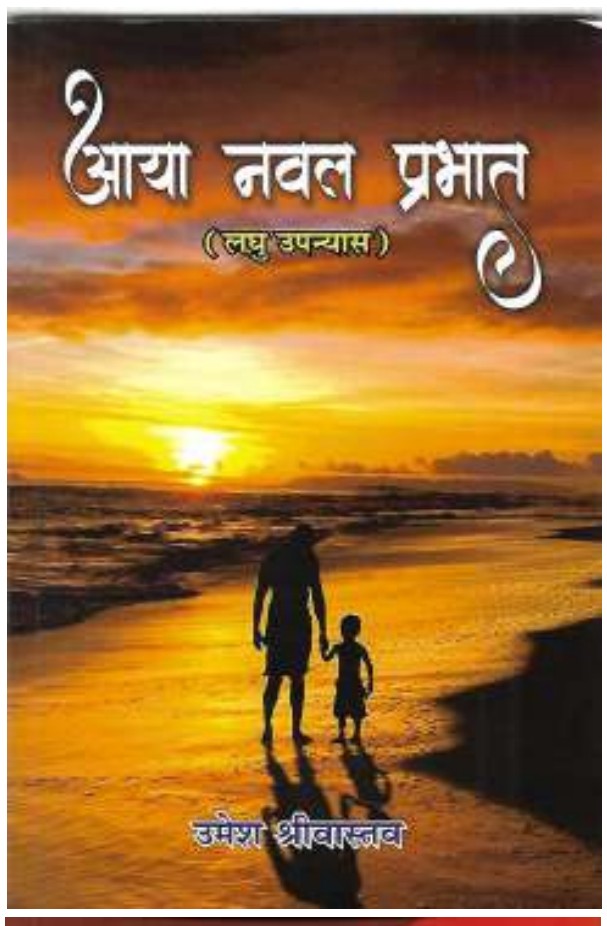

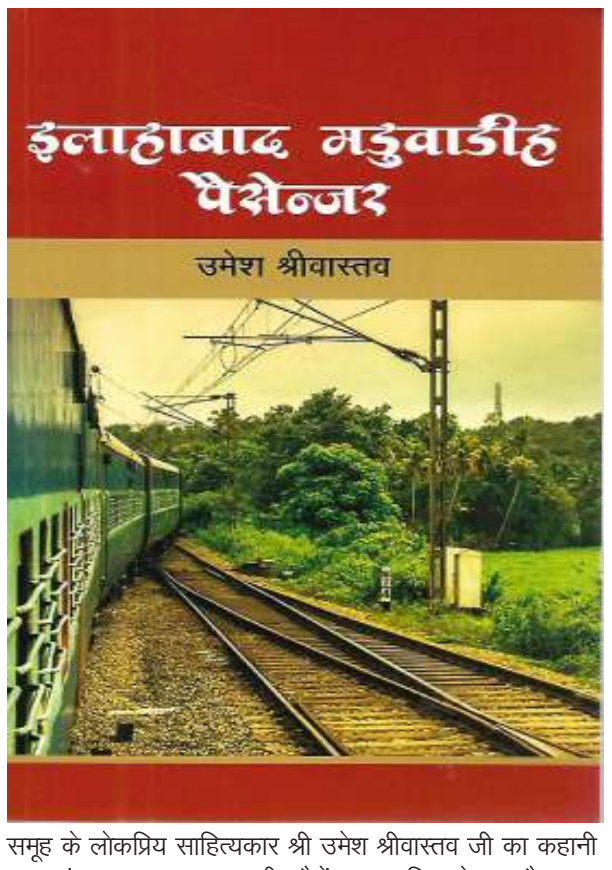

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

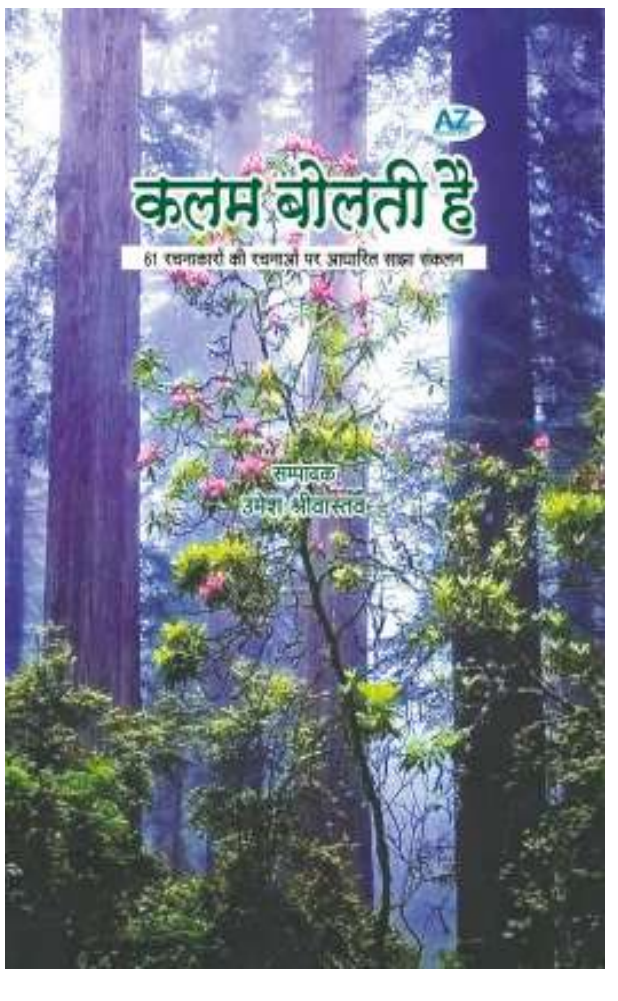

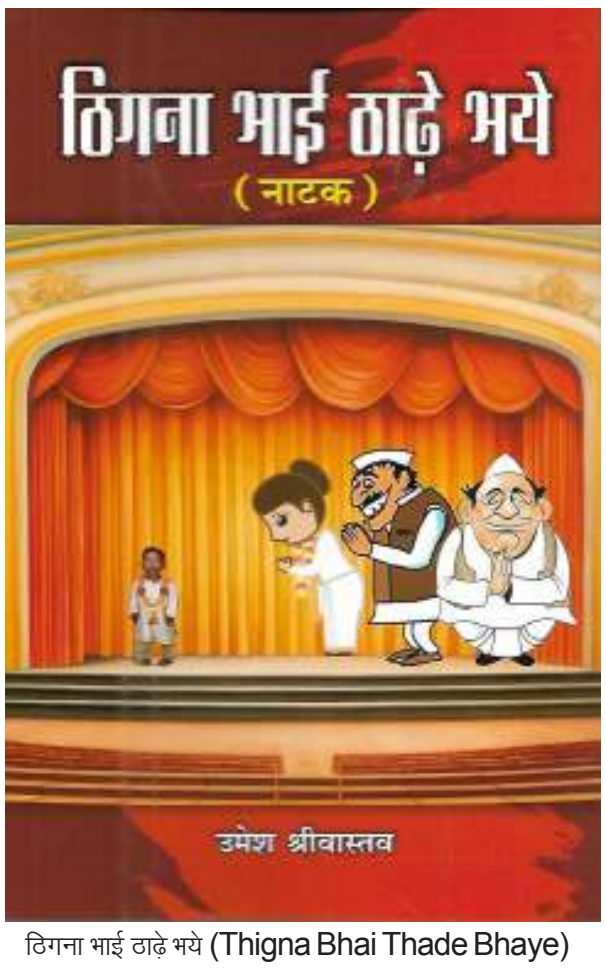

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

संक्षिप्त

नेपालः भारत से सटे जिले में सांप्रदायिक हिंसा, एक की मौत, अनिश्चितकालीन कर्फ्यू लागू, प्रशासन ने क्या कहा?

काठमांडू , एजेंसी। नेपाल के भारत से सटे सुनसरी जिले में सांप्रदायिक हिंसा में एक व्यक्ति की मौत हो गई। इस घटना में सुरक्षा कर्मियों समेत कई अन्य लोग घायल हुए हैं। हिंसा के बाद प्रशासन ने सोमवार से इलाके के कुछ हिस्सों में अनिश्चितकाल के लिए पाबंदियां लगा दी हैं। सुनसरी जिला

प्रशासन कार्यालय के अनुसार, यह पाबंदियां सुबह 7 बजे से लागू हुईं। ये प्रतिबंध कोशी प्रांत के इस जिले के पांच बाजार क्षेत्रों में लगाए गए हैं। प्रशासन ने कहा कि ये आदेश अगले निर्देश तक लागू रहेंगे। किन गतिविधियों पर लगी रोक?

प्रशासन के आदेश के तहत प्रभावित इलाकों में चार से ज्यादा लोगों के एक साथ जमा होने, प्रदर्शन, सार्वजनिक बैठक और धरने पर रोक लगा दी गई है। हिंसा की शुरुआत कैसे हुई? पुलिस के अनुसार, रविवार रात देवगंज ग्रामीण नगरपालिका के कप्तानगंज इलाके में दो समुदायों के लोगों के बीच झड़प हुई। दोनों समुदाय अलग–अलग कार्यक्रम आयोजित कर रहे थे। इसी दौरान लाउडस्पीकर के इस्तेमाल और धार्मिक झंडे लगाने को लेकर विवाद शुरू हो गया। पुलिस ने बताया कि दोनों पक्षों के बीच कहासुनी बढ़ गई और मामला हिंसा में बदल गया। स्थिति को संभालने के लिए सुरक्षा कर्मियों को मौके पर भेजा गया। गोलीबारी में युवक की मौत

पुलिस के अनुसार, हालात को काबू में करने की कोशिश के दौरान सुरक्षा बलों ने गोली चलाई। इसमें 24 साल के ओम प्रकाश मेहता की मौत हो गई। पुलिस ने बताया कि झड़प में सुरक्षा कर्मियों समेत एक दर्जन से ज्यादा लोग घायल हुए हैं। पाबंदी तोड़ने पर क्या होगी कार्रवाई? प्रशासन ने कहा कि प्रतिबंधों का उल्लंघन करने वालों पर 500 नेपाली रुपये तक का जुर्माना लगाया जा सकता है। इसके अलावा उन्हें एक महीने तक की जेल या दोनों सजाएं दी जा सकती हैं। सुनसरी नेपाल के दक्षिण–पूर्वी हिस्से में स्थित है। यह इलाका भारत के बिहार राज्य से सीमा साझा करता है और दोनों देशों के बीच एक अहम व्यापारिक और आवागमन मार्ग है।

एपस्टीन की 'फेवरेट': बेलारूस की डेंटिस्ट की कहानी, जो $100 मिलियन, 33 कैरेट की हीरे की अंगूठी की बनी दावेदार

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका में यौन अपराधों के आरोपी जेफरी एपस्टीन की मौत के करीब सात साल बाद उसकी कथित गर्लफ्रेंड डॉ. करिना शुलियाक एक बार फिर चर्चा में हैं। हाल ही में अमेरिकी न्याय विभाग (डीओजे) द्वारा जारी लाखों दस्तावेजों में दोनों के रिश्ते से जुड़ी कई नई जानकारियां सामने आई हैं। इन दस्तावेजों के अनुसार, बेलारूस की रहने वाली 37 वर्षीय डेंटिस्ट करिना शुलियाक एपस्टीन की वसीयत में शामिल हैं और उन्हें उसकी संपत्ति से 100 मिलियन डॉलर (करीब 860

करोड़ रुपये) तक की रकम और 33 कैरेट की हीरे की अंगूठी मिल सकती है। हालांकि उन्हें आखिरकार कितनी संपत्ति मिलेगी, यह अभी तय नहीं है। 2011 में हुई थी पहली मुलाकात एक अमेरिकी समाचार पत्र की रिपोर्ट के मुताबिक, करिना 2010 में स्टूडेंट वीजा पर बेलारूस से अमेरिका आई थीं। वह अंग्रेजी सीख रही थीं और एक डेंटल असिस्टेंट के रूप में करीब 15 डॉलर प्रति घंटे की नौकरी करती थीं। मार्च 2011 में उनकी मुलाकात 58 वर्षीय जेफरी एपस्टीन से हुई। शुरुआत में उन्होंने एपस्टीन की आर्थिक मदद लेने से इनकार कर दिया था, लेकिन बाद में दोनों के बीच करीबी रिश्ता बन गया। कुछ ही महीनों में करिना एपस्टीन के न्यू मैक्सिको स्थित रैंच और निजी द्वीप तक पहुंच गईं। पढ़ाई से लेकर खर्च तक सब उठाया दस्तावेजों के मुताबिक, एपस्टीन ने करिना की पढ़ाई का पूरा खर्च उठाया। उसने कोलंबिया यूनिवर्सिटी के डेंटल स्कूल में दाखिला दिलाने के लिए अपने प्रभाव का इस्तेमाल किया। रिपोर्ट के अनुसार, उसने विश्वविद्यालय को करीब 2.10 लाख डॉलर का दान भी दिया। एपस्टीन ने करिना की ट्यूशन फीस भरी, उन्हें क्रेडिट कार्ड दिया, दुनिया भर की यात्राएं कराईं और वर्षों में करीब 10 लाख डॉलर दिए। उसने करिना के माता–पिता को भी बेलारूस में हजारों डॉलर भेजे। अमेरिका की नागरिकता दिलाने के लिए कराई शादी रिपोर्ट में दावा किया गया है कि करिना का स्टूडेंट वीजा खत्म हो चुका था। ऐसे में 2013 में एपस्टीन ने उन्हें अमेरिका में कानूनी रूप से रहने का रास्ता निकालने के लिए अपनी एक महिला कर्मचारी और कथित पीड़िता से शादी कराने की योजना बनाई। दोनों महिलाओं की शादी न्यूयॉर्क में हुई। इसके बाद इमिग्रेशन दस्तावेज दाखिल किए गए और करिना को ग्रीन कार्ड मिल गया। बाद में 2018 में वह अमेरिकी नागरिक बन गईं। एक साल बाद दोनों का तलाक हो गया। बाद में अमेरिकी कांग्रेस की एक रिपोर्ट में दावा किया गया कि दूसरी महिला ने आरोप लगाया था कि उस पर यह शादी करने का दबाव बनाया गया था। एपस्टीन के घर और संपत्तियों का संभालती थीं काम 2019 तक करिना एपस्टीन के न्यूयॉर्क स्थित आलीशान घर में रहती थीं।

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जिले से प्रकाशित समाचार पत्र को समस्त जनपदों में एवम तहसील व ब्लॉक/शहर में ब्यूरो प्रमुख, चीफ रिपोर्टर, संवाददाता, प्रतिनिधि मण्डल की अवश्यकता है जिन्हे आकर्षण वेतन और भत्ते आदि सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

सम्पर्क सूत्र
शहर समता हिन्दी दैनिक/साप्ताहिक समाचार पत्र
मोबाईल नम्बर. 9190052 39332
.919450482227

अमेरिकाः फूड फेस्टिवल में गोलीबारी, मची अफरा–तफरी, तीन लोगों की मौत और चार घायलय क्या है पूरा मामला ?

सिएटल, एजेंसी। अमेरिका के सिएटल में स्पेस नीडल के पास चल रहे एक बड़े फूड फेस्टिवल में रविवार शाम हुई गोलीबारी में तीन लोगों की मौत हो गई। इस घटना में एक बच्चे समेत चार लोग घायल हुए हैं। शहर के दमकल विभाग के प्रवक्ता ने इसकी जानकारी दी। गोलीबारी शाम करीब 6 बजे (स्थानीय समय) हुई। उस समय श्बाइट ऑफ सिएटलश नाम का वार्षिक फेस्टिवल अपने आखिरी घंटों में था। इस फेस्टिवल में हर साल बड़ी संख्या में खाने–पीने की दुकानों, सामान बेचने वालों और कलाकारों की भागीदारी होती है। पुलिस मामले की जांच कर रही है और उसने लोगों से घटनास्थल के आसपास न जाने की अपील की है। पुलिस ने घटना के बारे में क्या बताया? सिएटल पुलिस ने बताया कि गोलीबारी के मामले में एक संदिग्ध को गिरफ्तार कर लिया गया है। इस गोलीबारी में तीन लोगों की मौत हुई। पुलिस अब दूसरे संदिग्ध की तलाश कर रही है। सिएटल पुलिस के सहायक प्रमुख टाइरोन डेविस ने बताया कि फरार संदिग्ध के बारे में जांचकर्ताओं के पास अभी कोई जानकारी नहीं है। उन्होंने कहा कि पुलिस को शक है कि दोनों संदिग्ध एक–दूसरे पर गोली चला रहे थे। पुलिस ने बताया कि आम लोगों के लिए अब कोई खतरा नहीं है। घायलों में कौन–कौन शामिल हैं? सिएटल दमकल की प्रवक्ता ग्रेस नुनेज ने बताया कि दो लोगों की मौके पर ही मौत हुई। उन्होंने बताया कि पांच घायलों को हार्बरव्यू मेडिकल सेंटर ले जाया गया। इनमें 56 साल की एक महिला की हालत गंभीर है। नुनेज ने बताया कि 2 साल के बच्चे, 23 साल के युवक और 39 साल की महिला की हालत स्थिर है। वहीं, 40 साल की एक महिला को मामूली चोटें आई हैं। गोलीबारी के बाद कैसे मची अफरा–तफरी? घटना के बाद बड़ी संख्या में पुलिस और आपातकालीन टीमों को मौके पर भेजा गया। सिएटल सेंटर के बड़े इलाके को खाली कराया गया। अधिकारियों ने अभी यह नहीं बताया है कि फेस्टिवल में गोलीबारी किस जगह हुई थी। इस कार्यक्रम में बाहर और अंदर दोनों जगहों पर आयोजन हो रहे थे। वाशिंगटन के गवर्नर ने क्या कहा? वॉशिंगटन के गवर्नर बॉब फर्ग्यूसन ने कहा कि उन्हें घटना की लगातार जानकारी दी जा रही है। उन्होंने स्थानीय पुलिस की मदद के लिए राज्य पुलिस की विशेष टीमों को भी भेजा है। फर्ग्यूसन ने कहा, मेरी संवेदनाएं पीड़ितों के परिवारों और उन सुरक्षाकर्मियों के साथ हैं, जो लोगों की सुरक्षा के लिए काम कर रहे हैं। चश्मदीदों ने क्या बताया? फेथ एडिया हंटर ने बताया कि वह और उनके दोस्त क्रेप बेचने वाले एक स्टॉल से खाना लेकर लौटे ही थे, तभी गोली चलने लगी। उन्होंने बताया कि उन्हें लगा कि हमलावर उनके बिल्कुल पास है। हंटर ने कहा, जब गोली चलनी शुरू हुई, तब हम उसके ठीक पास थे। इसलिए हम भागने लगे। हम भीड़ के साथ एक इमारत के अंदर चले गए। उन्होंने बताया कि वह और कई दूसरे लोग पास के सिएटल चिल्ड्रन म्यूजियम में छिप गए। गोलीबारी के बाद मची अफरा–तफरी में कई दुकानदार अपना सामान छोड़कर बाहर भाग गए। कई घंटे बाद कुछ दुकानदार पुलिस की घेराबंदी के बाहर खड़े रहे और इंतजार करते रहे कि उन्हें वापस जाकर अपने टेंट, खाना और सामान लेने की अनुमति कब मिलेगी। कार्यक्रम में स्टॉल लगाने वाले रॉबर्टो रामिरेज ने बताया कि पहले उन्हें पटाखों जैसी आवाज सुनाई दी। इसके बाद लोगों ने श्हमलावरश चिल्लाना शुरू कर दिया और घबराकर भागने लगे। उन्होंने कहा, अचानक सब कुछ खाली हो गया। लोग डर गए थे। रामिरेज ने बताया कि शुरुआत में कुछ लोग ऐसे भी फेस्टिवल में पहुंचते रहे, जिन्हें घटना की जानकारी नहीं थी। पुलिस ने उन्हें वहां से जाने को कहा। एक अन्य चश्मदीद एस्टन वाकोनाबो ने बताया कि वह अपनी गर्लफ्रेंड के साथ फोटो बूथ के लिए लाइन में खड़े थे। तभी किसी ने उन्हें पीछे से धक्का दिया। जब उन्होंने पीछे मुड़कर देखा तो बड़ी संख्या में लोग भागते हुए नजर आए। वाकोनाबो ने कहा, लोग छिप रहे थे, एक–दूसरे को धक्का दे रहे थे। लोग जमीन पर गिर रहे थे और बच्चों की गाड़ियां भी गिर रही थीं। उन्होंने बताया कि उसी समय उन्हें गोलियों की आवाज सुनाई दी। उन्होंने कहा, जब मैंने लगातार गोलियों की आवाज सुनी, तभी मुझे समझ आया कि यह गोली चलाने वाला हमला है। वाकोनाबो ने बताया कि उन्होंने अपनी गर्लफ्रेंड को सुरक्षित जगह पहुंचाया। इसके बाद वह वापस घटनास्थल पर गए, जहां उन्होंने जमीन पर कई घायलों को देखा। साल 1982 में शुरू हुआ यह वार्षिक फूड फेस्टिवल हर साल बड़ी संख्या में लोगों को आकर्षित करता है। फेस्टिवल की वेबसाइट के अनुसार, इसमें तीन दिनों तक खाने–पीने, मनोरंजन और सामुदायिक उत्सव के लिए करीब 3.5 लाख लोग शामिल होते हैं।

`यह केवल भारत की नहीं, हम सबकी लड़ाई है': ग्रेटा ने CJP के नेतृत्व वाले आंदोलन को दिया समर्थनय क्या–क्या कहा ?

लंदन, एजेंसी। जलवायु कार्यकर्ता ग्रेटा थनबर्ग ने रविवार को शिक्षा व्यवस्था में गड़बड़ियों के खिलाफ कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के नेतृत्व में चल रहे छात्र आंदोलन का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि इस आंदोलन ने जनता की ताकत का असली मतलब बताया है। ग्रेटा लंदन में स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (एसएफआई) की ओर से आयोजित एक कार्यक्रम में बोल रहीं थीं। उन्होंने कहा कि छात्रों की न्याय की लड़ाई और लोकतंत्र व आजादी के लिए चल रहा व्यापक संघर्ष पूरी दुनिया की साझा लड़ाई है। उन्होंने कहा, भारतीय छात्र आंदोलन ने हम सभी को गर्व महसूस कराया है। इसने हमें उम्मीद दी है। इस आंदोलन ने दिखाया है कि जब लोग एकजुट होकर विरोध करते हैं तो वे क्या हासिल कर सकते हैं। इसने जनता की ताकत का असली मतलब बताया है। ग्रेटा ने कहा कि भारतीय छात्रों की न्याय की लड़ाई और लोकतंत्र व आजादी का संघर्ष दुनिया भर के लोगों का भी संघर्ष है। उन्होंने कहा कि सभी लोगों को भारत के समर्थन में एकजुट होकर साथ खड़ा होना चाहिए। एसएफआई ने क्या कहा?

एसएफआई यूके ने सप्ताहांत में इस कार्यक्रम का आयोजन किया। संगठन ने इसे छात्र आंदोलन की जीत का जश्न बताया। एसएफआई यूके ने एक बयान में कहा, हम छात्र आंदोलन के संघर्ष और शिक्षा मंत्री के इस्तीफे तक पहुंचाने वाली इसकी सफलता को सलाम करते हैं। संगठन ने कहा, यह लड़ाई बहुत प्रेरणादायक और साहसिक रही है। लेकिन अभी खत्म नहीं हुई है। संगठन ने कहा कि नीट मामले से जुड़े घटनाक्रम में जान गंवाने वाले 21 छात्रों और प्रदर्शनकारियों पर हुई पुलिस कार्रवाई को लेकर दुख अब भी बना हुआ है। आंदोलन कैसे खत्म हुआ? यह घटनाक्रम कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के 36 दिन लंबे आंदोलन के बाद सामने आया। इस आंदोलन के बाद धर्मेंद्र प्रधान ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री पद से इस्तीफा दे दिया। 20 जून से शुरू हुआ यह आंदोलन 20 जुलाई को प्रदर्शनकारियों पर पुलिस कार्रवाई के बाद और तेज हो गया। इसके बाद कई छात्र संगठनों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने आंदोलन का समर्थन किया। इनमें सोनम वांगचुक भी शामिल थे, जिन्होंने आंदोलन के समर्थन में लंबा अनशन किया था। सीजेपी ने शनिवार को घोषणा की कि वह अपना 36 दिन पुराना आंदोलन खत्म कर रही है। पार्टी ने कहा कि केंद्र सरकार ने उसकी बची हुई मांगें मान ली हैं। इन मांगों में नीट पेपर लीक के बाद कथित रूप से आत्महत्या करने वाले छात्रों के परिवारों को मुआवजा देना और प्रदर्शनकारियों के खिलाफ दर्ज एफआईआर वापस लेना शामिल है।

इस्राइल को चुनौती दे रहा ईरान?:हिजबुल्ला के समर्थन में आए मोजतबा, कहा- जिहाद और प्रतिरोध ही आखिरी रास्ता

तेहरान, एजेंसी। ईरान के सुप्रीम लीडर मोजतबा खामेनेई ने इस्राइल के खिलाफ हिजबुल्ला के लड़ाकों की खुलकर सराहना की है। उन्होंने हिजबुल्ला को आक्रामकता के खिलाफ मजबूत चट्टान बताते हुए कहा कि इस्लामिक रिपब्लिक ने लेबनानी लड़ाकों की रक्षा को अपनी रणनीतिक नीति का हिस्सा बनाया है। मोजतबा खामेनेई ने हिजबुल्ला को लेकर क्या कहा?

अर्ध–सरकारी समाचार एजेंसी तस्नीम के अनुसार, मोजतबा खामेनेई ने कहा कि हिजबुल्ला की मजबूती दुनिया भर के उन देशों के लिए हौसले का संदेश बन गई है, जो दमन और वैश्विक अहंकार के खिलाफ संघर्ष कर रहे हैं। शेख नईम कासिम को लिखे जवाब में क्या कहा गया? सोशल मीडिया पर साझा किए गए संदेश में खामेनेई ने हिजबुल्ला के महासचिव शेख नईम कासिम और संगठन के लड़ाकों की ओर से भेजे गए वफादारी पत्र का जवाब दिया। उन्होंने उनके धैर्य, बड़प्पन और त्याग की सराहना करते हुए हिजबुल्ला को इस्राइल के खिलाफ प्रतिरोध में सबसे आगे रहने वाली अडिग चट्टान बताया। श्जिहाद और प्रतिरोधश को लेकर खामेनेई का क्या बयान रहा? खामेनेई ने कहा कि आज जब दुनिया के कई देश अमेरिकी सरकार और अपराधी जायोनी ताकतों के अत्याचार और दमन से परेशान हैं, तब जिहाद और प्रतिरोध के अलावा आगे बढ़ने का कोई दूसरा रास्ता नहीं बचा है।

उन्होंने कहा कि लेबनान का हिजबुल्ला जिहादी समूहों का नेतृत्व करते हुए इस्राइल और उसके समर्थकों के हिंसक हमलों के खिलाफ मजबूती से खड़ा है। उनके अनुसार, यह दृढ़ता दुनिया के आजाद देशों के लिए प्रेरणा का संदेश बन गई है। ईरान ने अपनी रणनीतिक नीति को लेकर क्या कहा? मोजतबा खामेनेई ने कहा कि इन लड़ाकों की रक्षा करना ईरान की रणनीतिक नीति है। उन्होंने यह भी कहा कि अमेरिका के साथ युद्ध समाप्त करने से जुड़े किसी भी समझौते के लिए लेबनान की क्षेत्रीय अखंडता बनाए रखना और इस्राइली श्आक्रामकताश को पूरी तरह तथा बिना शर्त समाप्त करना पहली शर्त होनी चाहिए।

हिजबुल्ला के विकास को लेकर क्या टिप्पणी की गई? खामेनेई ने दक्षिणी लेबनान के लोगों के धैर्य और समर्थन की सराहना की। उन्होंने हिजबुल्ला के दिवंगत नेता सैयद हसन नसरल्लाह और अन्य कमांडरों को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि लड़ाकों ने हिजबुल्ला को एक श्छोटे पौधेश से श्बड़े पेड़श में बदल दिया और पूरे इस्लामी जगत में लेबनान का सम्मान बढ़ाया।

क्या जंग का नया मोर्चा खुलने वाला है?: यूक्रेन के हमले से बौखलाया ईरान, अराघची ने कौन से जवाब की बात कही

तेहरान, एजेंसी। ईरान के विदेश मंत्री सैयद अब्बास अराघची ने रविवार को कैस्पियन सागर में एक ईरानी व्यापारिक जहाज पर यूक्रेन के हमले की निंदा की। उन्होंने चेतावनी दी कि इस घटना को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता और इसका जवाब दिया जाएगा। अराघची ने यूक्रेन पर संयुक्त राष्ट्र के नियमों का उल्लंघन करने का आरोप लगाया। अराघची ने सोशल मीडिया

प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट की। इसमें उन्होंने आरोप लगाया कि यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने ईरानी जहाज पर हमले का आदेश दिया था। उन्होंने कहा कि इस हमले में एक नाविक की मौत हुई है। अराघची ने दावा किया कि यह हमला इस्राइल के कहने पर किया गया, ताकि यूरोप को उसके युद्ध में खींचा जा सके। अराघची ने कहा, जेलेंस्की ने एक ईरानी व्यापारिक जहाज पर हमला किया, जिसमें एक नाविक की मौत हुई। यह संयुक्त राष्ट्र के नियमों का खुला उल्लंघन है और इसे इस्राइल के कहने पर यूरोप को युद्ध में शामिल करने के लिए किया गया। उन्होंने कहा कि यूरोपीय संघ की विदेश नीति प्रमुख काजा कलास और रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव से बातचीत में उन्होंने साफ कर दिया है कि कीव में बैठे लोगों की इस कार्रवाई को बिना जवाब दिए नहीं छोड़ा जाएगा। यूक्रेन के प्रभारी राजदूत के सामने जताया विरोध ईरान ने इससे पहले तेहरान में यूक्रेन के कार्यवाहक प्रभारी राजदूत को बुलाकर इस घटना पर आधिकारिक विरोध दर्ज कराया था। ईरान की सरकारी समाचार एजेंसी आईआरएनए के अनुसार, ईरान के सहायक विदेश मंत्री और यूरेशिया मामलों के महानिदेशक मनोचेहर मुरादी ने यूक्रेन के हमले पर कड़ा विरोध जताया। उन्होंने ईरानी व्यापारिक जहाज पर हुए हमले को श्दुश्मनी भरा और आपराधिक कृत्यश बताया। मुरादी ने कहा कि यह हमला संयुक्त राष्ट्र चार्टर के मूल नियमों का उल्लंघन है। उन्होंने इसे आक्रामक कार्रवाई बताया और कहा कि इससे सभी तटीय देशों की सुरक्षा को सीधा खतरा पैदा हुआ है। उन्होंने कहा कि इस घटना के लिए यूक्रेन को जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए और हमले में शामिल लोगों को सजा मिलनी चाहिए। ईरान के विदेश मंत्रालय ने भी कहा कि वह अपने देश की सुरक्षा और हितों की पूरी तरह रक्षा करेगा। मंत्रालय ने कहा कि अपने नागरिकों की जान और संपत्ति पर हुए हमलों का जवाब जरूर दिया जाएगा। ईरान की यह आपत्ति यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की के उस बयान के बाद आई, जिसमें उन्होंने कहा था कि यूक्रेन ने रूस में सैन्य ठिकानों से जुड़े लक्ष्यों पर लंबी दूरी के हमले किए हैं। इनमें कैस्पियन सागर के इलाके में किए गए हमले भी शामिल हैं। जेलेंस्की ने क्या कहा था? जेलेंस्की ने कहा, कैस्पियन सागर में लंबी दूरी के हमलों से हमें बड़ी सफलता मिली है। इनमें वे जहाज भी शामिल हैं, जिनका इस्तेमाल ईरान से जुड़े सैन्य सामान के परिवहन में किया जा रहा था। इसके अलावा एक युद्धपोत को भी निशाना बनाया गया। एक अन्य पोस्ट में जेलेंस्की ने आरोप लगाया कि रूस ईरान को खाड़ी देशों और अमेरिकी सैन्य ठिकानों की उपग्रह तस्वीरें उपलब्ध करा रहा है। उन्होंने दावा किया कि ईरान ने हमलों की तैयारी में इन जानकारियों का इस्तेमाल किया।

जेलेंस्की ने कहा, मैं अपनी खुफिया एजेंसियों को निर्देश दूंगा कि वे रूस की ओर से ईरानी शासन को दी जा रही नई मदद से जुड़ी जानकारी हमारे सहयोगियों के साथ साझा करें। उन्होंने कहा कि जुलाई की शुरुआत से यूक्रेन ने खाड़ी देशों और वहां मौजूद अमेरिकी सैन्य ठिकानों पर रूस की सक्रिय उपग्रह निगरानी दर्ज की है। जेलेंस्की ने दावा किया कि बाद में ये तस्वीरें ईरान तक पहुंचीं। उन्होंने कहा कि रूस की ओर से ली गई इन जगहों की उपग्रह तस्वीरों और ईरान के हमलों के बीच सीधा संबंध नजर आता है। उनके अनुसार, इन तस्वीरों का इस्तेमाल हमले से पहले तैयारी करने, हमले के दौरान और बाद में नुकसान का आकलन करने के लिए किया गया।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com
इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।